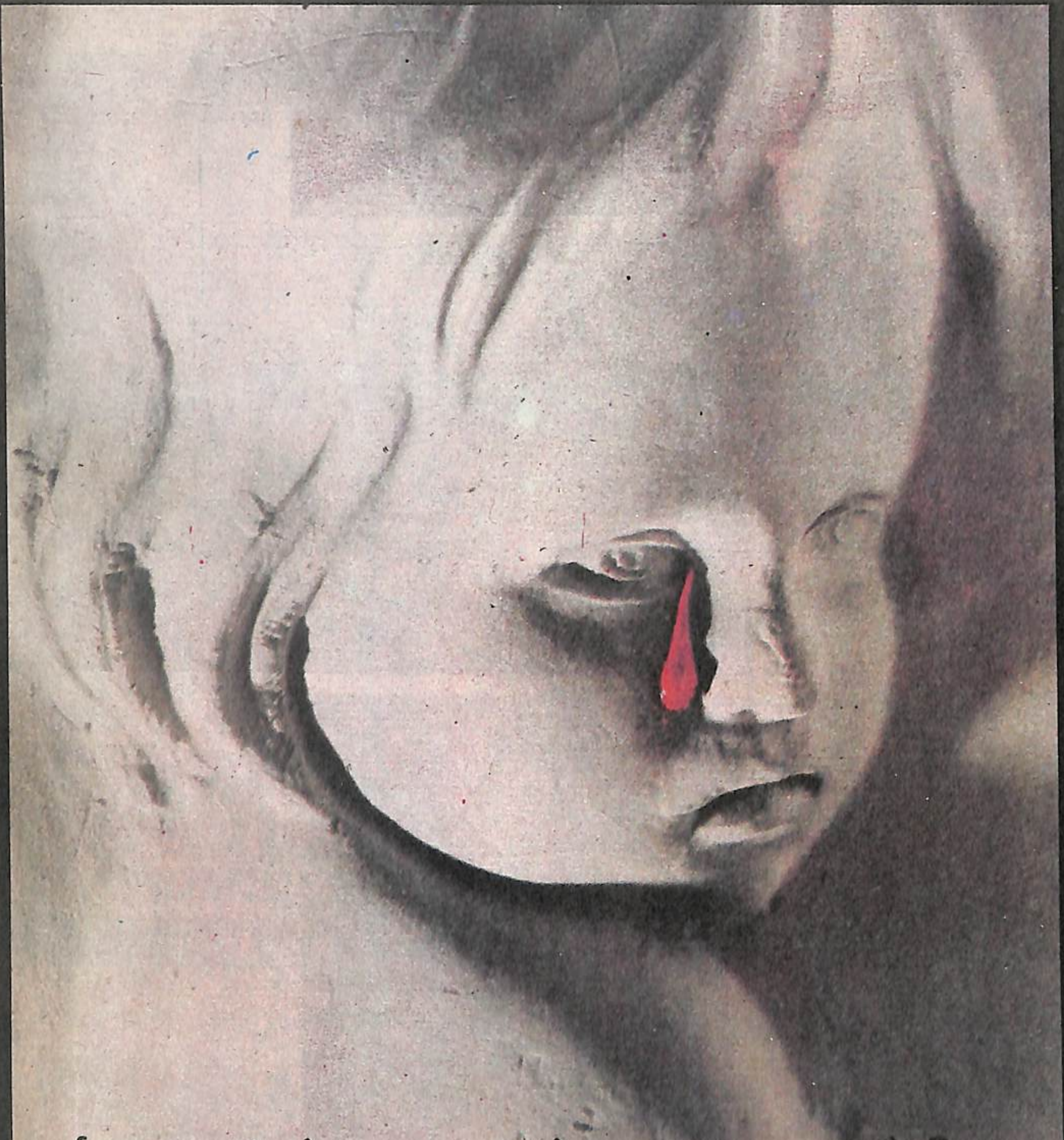
चकमक

फरवरी, 1993 | बाल विज्ञान पत्रिका | रु. 5.00



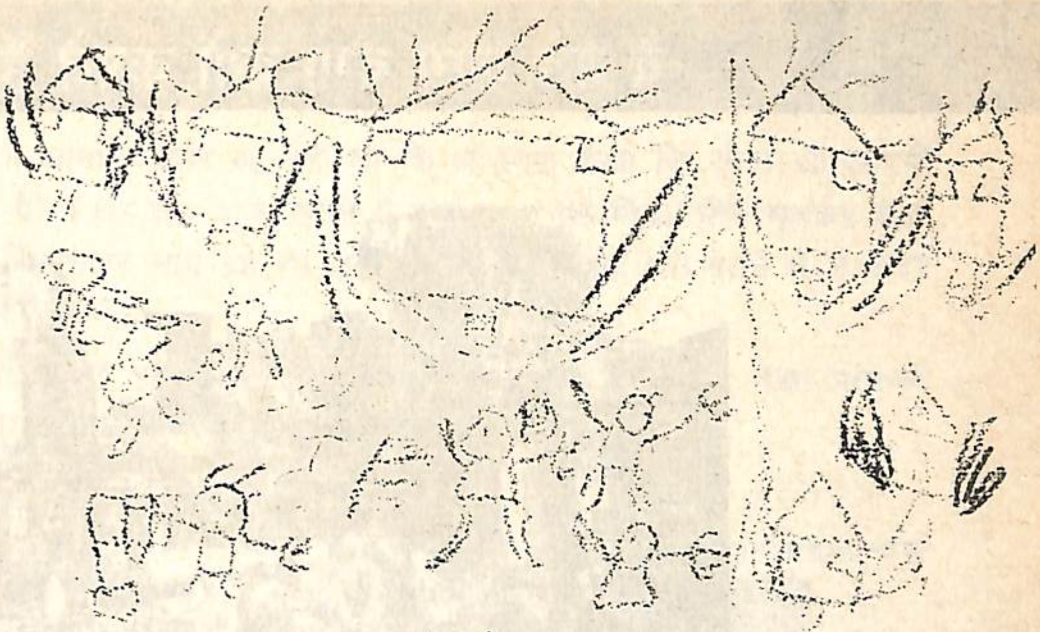


दिसंबर, 92 में हुए
दंगों के दौरान
सांप्रदायिकता की आग
में झुलसता
भोपाल!





यहां तथा अंदर के पृष्ठों पर बच्चों की रचनाओं के साथ प्रकाशित सभी छायाचित्रों के छायाकार हैं, दिल्ली के जयप्रकाश।



शबाना, आठ वर्ष, भोपाल

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-8 अंक-8 फरवरी, 1993

संपादक

विनोद रायना

सह-संपादक

राजेश उत्साही

कविता सुरेश

संपादन सहयोग

टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा

जया विवेक

उत्पादन/वितरण

कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा

एक प्रति : पांच रुपए

छमाही : पच्चीस रुपए

वार्षिक : पचास रुपए

डाक ख़र्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,

ई-1/208, अरेरा कालोनी,

भोपाल-462 016 (म.प्र.)

फोन : 563380

काग़ज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

इस अंक में...

आवरण चित्र, विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, दिल्ली के सौजन्य से।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

ये बड़े लोग दंगा क्यों करते हैं?



हम बिलकुल तंग आ गए हैं इनसे! हम बच्चे सबसे दोस्ती रखते हैं। हां, हम लोगों में खिलौनों या किताबों को लेकर ज़रूर छीना-झपटी होती है- लेकिन पल भर झगड़ा और फिर दोस्ती। लेकिन ये बड़े जाने क्यों एक-दूसरे की जान के पीछे पड़े रहते हैं! हमें इसी बात का डर है कि जब हम बड़े हो जाएंगे, तो इनकी सीख से क्या हम भी इन्हीं के जैसे बन जाएंगे?

अभी जो भोपाल में दंगे हुए, हिंदू-मुस्लिम के, उन्हें हम बिल्कुल ग़लत व पागलों की हरकत मानते हैं- बड़े माफ़ करें अगर हम उन्हें पागल कह रहे हैं। भोपाल, बंबई, जयपुर, अहमदाबाद और न जाने कितनी और जगहों में क्या ख़ौफ़ और भय समा गया है। इस चकमक के पन्नों में ऐसे चित्र भी हैं- भोपाल के, जिनसे पता चलता है कि दंगों में पागल हो के लोग कैसी बर्बादी करते हैं। और कहानियां व कविताएं भी हैं- उन बच्चों की जो दंगा पीड़ित इलाकों में रहते हैं।

इस सब को देख-सुन के तो हम यही कहना चाहते हैं कि-

अमन के रखवाले, एक हैं एक हैं!

हमारा नारा, भाईचारा!

हिंदु-मुस्लिम मिलकर रहें!

सुबह के दस बजे थे। मैं सामान लेकर आ रहा था कि अचानक देखा कि सौ-दो-सौ आदमी तलवारें लेकर खड़े हुए थे। मैं घर तक पहुंचा इतने में शोर-सा सुनाई दिया। पीछे मुड़कर देखा तो लड़के 'मारो-मारो' चिल्लाकर भाग रहे थे। सबके हाथों में तलवारें थीं। इतने में मैं अंदर चला गया।

शाम तक पत्थरबाज़ी होती रही फिर कर्फ़्यू लग गया। दो-एक दिन बाद देखा पांच-छः घर जले पड़े हैं, चार-छः गाड़ियां जली पड़ी हैं।

मेरी गुज़ारिश है हिंदु-मुस्लिम मिलकर रहें।

❑ मो. साजिद, पांचवीं, बाग उमराव दूल्हा, भोपाल



परसों रात के ग्यारह बजे हमारी गली के अंदर झगड़ा हो रहा था। हमें नहीं मालूम कौन गदर मचा रहा था। पुलिस आई, पुलिस ने ख़ूब मारा। एक आदमी का हाथ तोड़ दिया और उसे थाने ले गई। फिर सब भाग गए।

पुलिस रात में पीछे ही रहती है। हम बहुत डर गए हैं।

❑ सुनील कुमार, चौथी, महामाई का बाग, भोपाल

मैं उस दिन पेपर देने गया था और जल्दी घर आ गया। बाजू वाले घर पर पुलिस तीसरी मंज़िल पर चढ़कर बंदूक अड़ाए हुई थी कि देखते ही गोली मार देंगे। उसी समय पीछे-से दो कमरों की दीवार तोड़ी, दो जगह से। सबके पास कुल्हाड़ी-फावड़े वग़ैरह थे। दीवार तोड़कर दस-बारह लोग अंदर आए और आग लगा दी। हम लोग पुलिस की नज़र बचाकर चुपके-चुपके पड़ोस में ख़ालू के घर भाग गए थे।

❑ शादाब, छठवीं, महामाई का बाग, भोपाल

स्कूल में तो यह नहीं सिखाया जाता!

जैसा कि देखा गया है कि 6, दिसंबर 1992 की काली रात लोगों के मन एक बनावटी प्रेत बनकर दिलो-दिमाग़ पर छा गई। जब मैं आधी रात को अपने कमरे में पढ़ाई करके उठा तब मैंने कुछ लोगों की आवाज़ें सुनीं। मेरे बड़े भाई ने झांककर देखा। कुछ लोगों ने हमारे घर के सामने की दुकानों का सामान लूटा। तब भी उनके मन की आग शांत नहीं हुई तो उन्होंने दुकानों में आग लगा दी। यह देखकर मेरा मन कांप उठा।

यह सब जो हुआ क्या ठीक हुआ? नहीं! हमारी क्लास में, हमारे स्कूल में तो यह सब नहीं सिखाया जाता। जो यह सब सिखाता है वो मूर्ख है।

❑ श्याम राठौर, नौवीं, सुल्तानिया रोड, भोपाल



भोपाल में हिंदू-मुसलमान की लड़ाई में कई लोग की जान निकल गई। इस वक़्त में कई लोगों ने पुरानी दुश्मनी निकाली है। उन दिनों लोग बहुत डरे हुए थे क्योंकि हर जगह लड़ाई-झगड़े चल रहे थे। कई परिवार मिटाए गए फिर भी उन परिवारों ने हिम्मत नहीं हारी। इससे पहले लड़ाई-झगड़े कभी नहीं हुए थे।

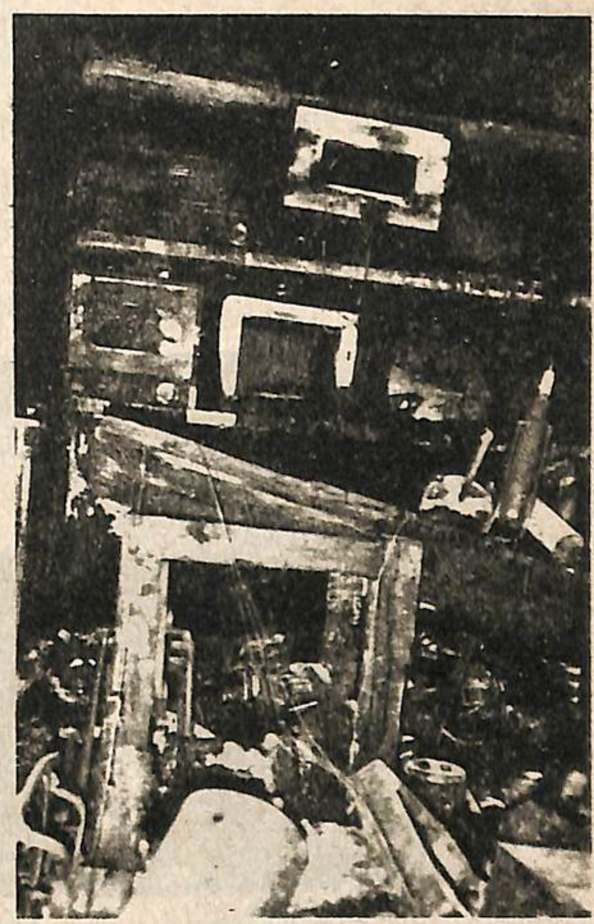
❑ नसरीन, छठवीं, बिजलीघर कॉलोनी, भोपाल

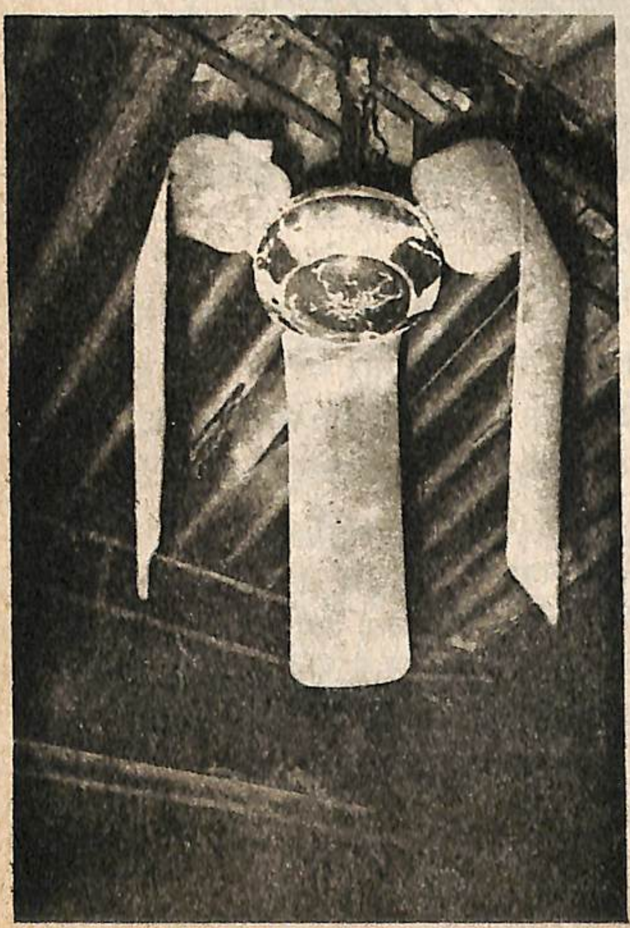
उस दिन सात दिसंबर को हमारे घर के सामने पूरी दुकानें बंद हो गईं। हम सब घर में ही थे। हमें मालूम नहीं था कि बाहर लड़ाई हो गई और पीछे वाली गली में आग लगा दी गई है। यहां बहुत आदमी मारे गए। हमारी गली के सब लोग भाग गए थे। हम भी तीन-चार बार दूसरों के यहां रहने गए।

❑ नुसरत, छठवीं, बाग उमराव दूल्हा, भोपाल

मन में भय

दंगे फसाद हुए मार काट हुई
दंगे में कर्फ़्यु के दौरान
कर्फ़्यु में मिली ढील
मां बेटे से बोली,
बेटा दाढ़ी कटवा लो,
तुम्हें कोई मुसलमान
समझकर मार डालेगा।
बहन बोली, नहीं भइया
दाढ़ी मत कटवाना, तुम्हें





कोई हिंदू समझकर मार डालेगा।
बाप अपने छोटे बेटे से बोला,
बेटा स्कूल मत जाना, तुम्हें
कुछ भी हो सकता है।
स्कूल जाते हैं
जाते-जाते मन में भय भरा रहता
कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाए।
कहीं कोई झगड़ा न हो जाए।

❑ पंकज कुमार झा, नौवीं, टीलाजमालपुरा, भोपाल

न जाने भोपाल का अमन-चैन कहां चला गया!

भोपाल की जो एकता थी उस पर लोग गर्व करते थे। शायद किसी की नज़र लग गई। इसलिए सात दिसंबर को भोपाल में लड़ाई-झगड़े हुए और न जाने भोपाल का अमन-चैन कहां चला गया। बहुत से लोग इस लड़ाई-झगड़े के शिकार हुए और न जाने कितने परिवार उजड़ गए। हिंदू-मुसलमानों में जो एकता थी वो न जाने कहां चली गई। वे आपस में लड़ने-झगड़ने लगे। ये न जाने कहां का वक़्त आ गया जो दुनिया उजड़ गई और यहां की शांति भंग हो गई। हमें अब बहुत बुरा लगने लगा है। हमारी तो यही इच्छा है कि वो खोई हुई दुनिया फिर से आ जाए।

❑ साएमा, छठवीं, बाग उमराव दूल्हा, भोपाल

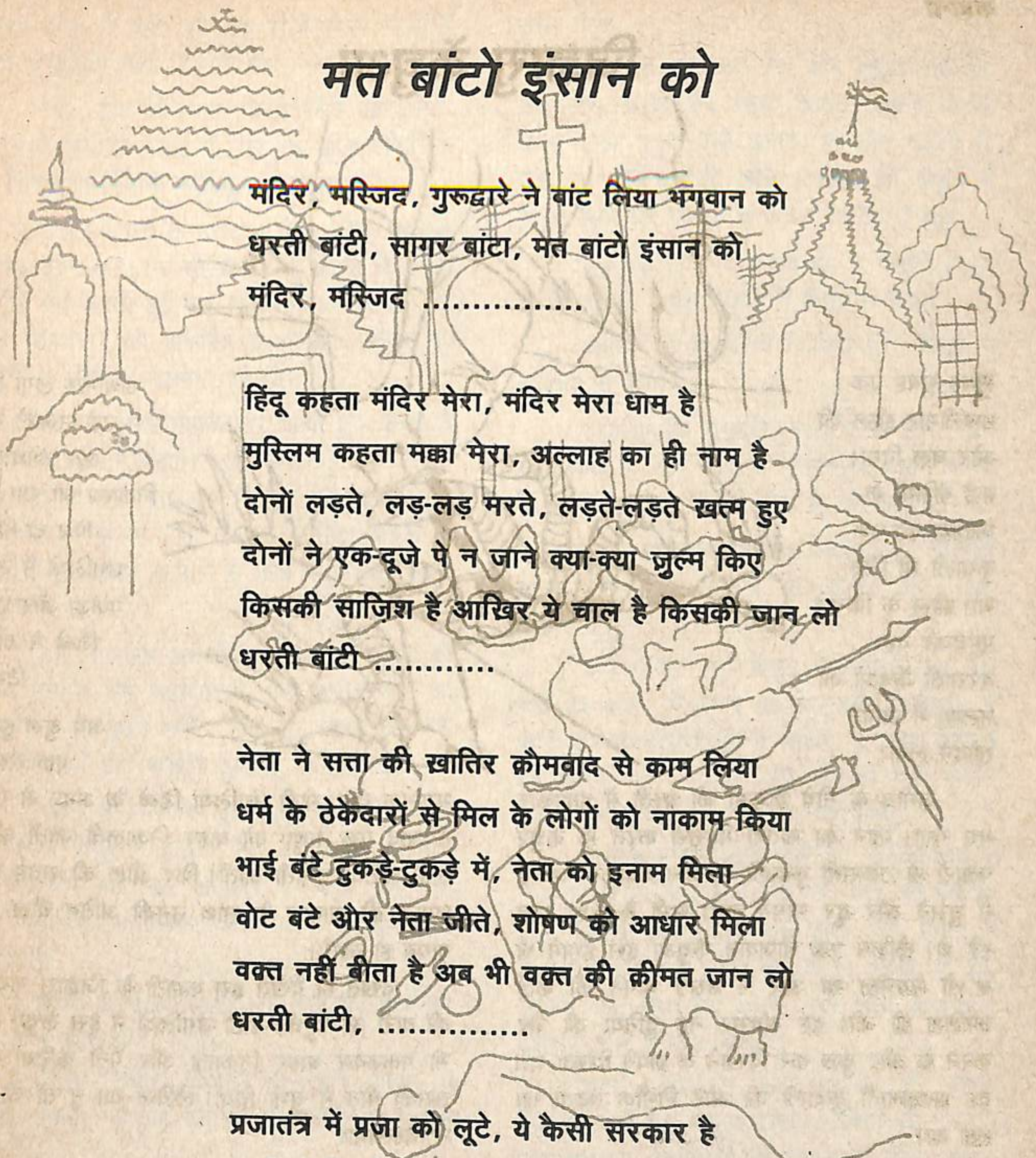


ऐसा कब तक होगा?

टीलाजमालपुरा में सात दिसंबर को सुबह ठीक साढ़े आठ बजे का टाइम होगा। मैं अपने स्कूल की तैयारी कर ही रहा था कि इतने में भाग दौड़ मच गई। हमारे घर से थोड़ी दूरी पर एक दुकान लूट ली गई। थोड़ी देर बाद उसके आसपास की दुकानें भी जला दी गईं। फिर चारों तरफ धुआं ही धुआं हो गया। जैसे कि होली की रात को लकड़ियां जलाई जाती हैं, उसी प्रकार यहां आसपास के घर जल उठे। कई लोग मारे गए। सब को अपनी जान की पड़ी थी। कब क्या हो जाए कोई नहीं बता सकता था। मैं सोच रहा था कि, यह क्या हो गया भोपाल वासियों को, ये क्यों लड़ रहे हैं। यह सब सोचने की बात है, हम क्यों अपने भाइयों का ख़ून पीने पर उतर आए हैं। आख़िर इसका हल क्या होगा? ऐसा कब तक होगा? क्या यही वह भोपाल है जहां कभी भी किसी प्रकार लड़ाई नहीं होती थी। तीन दिनों तक कोई सो नहीं पाया, किसी ने भी भोजन नहीं किया। सब ख़ामोश-से हो गए थे।

❑ संतोष कुमार सोनार, नौवीं, टीलाजमालपुरा, भोपाल

मत बांटो इंसान को



मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे ने बांट लिया भगवान को
धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो इंसान को
मंदिर, मस्जिद ....

हिंदू कहता मंदिर मेरा, मंदिर मेरा धाम है
मुस्लिम कहता मक्का मेरा, अल्लाह का ही नाम है
दोनों लड़ते, लड़-लड़ मरते, लड़ते-लड़ते खत्म हुए
दोनों ने एक-दूजे पे न जाने क्या-क्या ज़ुल्म किए
किसकी साज़िश है आखिर ये चाल है किसकी जान लो
धरती बांटी ....

नेता ने सत्ता की ख़ातिर क़ौमवाद से काम लिया
धर्म के ठेकेदारों से मिल के लोगों को नाकाम किया
भाई बंटे टुकड़े-टुकड़े में, नेता को इनाम मिला
वोट बंटे और नेता जीते, शोषण को आधार मिला
वक़्त नहीं बीता है अब भी वक़्त की क़ीमत जान लो
धरती बांटी, ...

प्रजातंत्र में प्रजा को लूटे, ये कैसी सरकार है
लाठी-गोली, ईश्वर-अल्लाह ये सारे हथियार हैं
इनसे बचो और बच के रहो और लड़कर इनसे जीत लो
हक़ है तुम्हारा चैन से रहना, अपने हक़ को छीन लो
अगर हो तुम शैतानी से तंग, ख़त्म करो शैतान को
धरती बांटी, ...

(रेखांकन : एकेश्वर जनवादी लेखक संघ, राजस्थान के सौजन्य से)

जिज्ञासु केंचुआ



सुबह-सुबह एक मछलीमार झील की ओर चल दिया। कई बंसियों के अलावा वह एक कुदाली भी लिए था। झील के किनारे पहुंचकर वह बरसाती केंचुओं की तलाश में ज़मीन खोदने लगा।

ज़मीन के नीचे केंचुओं की बस्ती में हाहाकार मच गया। जान का ख़तरा महसूस करते ही केंचुए पत्थरों से टकराती कुदाली से जान बचाकर गहराई में घुसने और दूर भागने लगे। सभी बेतहाशा भाग रहे थे। लेकिन एक नौजवान केंचुआ इस हंगामे से न तो भयभीत था और न उसने भागने की कोई कोशिश ही की। वह अक़्सर नई दुनिया की सैर करने के और कुछ कर दिखाने के सपने देखता था। वह झनझनाती कुदाली की ओर निर्भीक बढ़ता जा रहा था।

"अरे, तू क्या पागल हो गया है?" एक बूढ़े केंचुए ने उसे रोकना चाहा। "कहां जा रहा है? लौट आ, अभी वक़्त है।"

लेकिन उसने इस चेतावनी की परवाह न की।

"बचाओ!" उसे एक महीन आवाज़ सुनाई दी।

लेकिन वह हिम्मती केंचुआ तब तक रेंगता रहा, जब तक कि कुदाली तक न पहुंच गया। और अचानक लगा कि उसे उजाले की ओर खींचकर निकाला जा रहा है। फिर दो मोटी उंगलियों ने उसे पकड़ा और एक डिब्बे में डाल दिया।

अब शुरू हुआ एक सबसे भयानक दौर। मोटी उंगलियां डिब्बे के अंदर से एक के बाद एक केंचुए को बाहर निकालती जातीं और उन्हें कंटिया चुभोती जातीं। फिर झील की सतह पर छपाक की आवाज़ के साथ उनकी अंतिम चीख़ भी ग़ायब हो जाती।

देखते ही देखते इस कहानी के जिज्ञासु नायक की बारी आ पहुंची। मोटी उंगलियों ने इस केंचुए को भी पकड़कर बाहर निकाला और पैनी कंटिया को उसकी पीठ में चुभो दिया। लेकिन वह न तो चीख़ा न चिल्लाया।

हवा में पतली डोरी सनसनाते हुए लहराई और जल की सतह पर वह केंचुआ जा टकराया। छींटे उड़े और डोरी से बंधे भार से खिंचता हुआ वह रहस्यमय जललोक में धीरे-धीरे उतरते हुए जा पहुंचा।

उसके आसपास पतली लंबी जल-घास लहराती हुई कभी-कभी उसे छू जाती थी। और नीचे

शायद झील के तल पर एक सीपी मस्ती से कोई गीत गुनगुनाती चली जा रही थी।

"लो, शुरू हो गया चिरप्रतीक्षित परिवर्तन," केंचुए ने ख़ुद को बधाई दी, पर एक झील निवासिनी से शिष्टाचार निभाना नहीं भूला, "नमस्कार!"

लेकिन किसी ने उत्तर न दिया। सिर्फ़ बुलबुले ऊपर उठने लगे। यह थी सीपी, जो जल्दी से अपना कपाट बंद करती हुई एक तरफ लुढ़क गई थी। वह ऐसे शिष्टाचार की अभ्यस्त न थी और केंचुए की बंदगी से चौंककर डगमगा गई थी।

"मैं इस जगह पहली बार आया हूं," केंचुए ने अपनी बात आगे बढ़ाई। यद्यपि उसको मालूम न था कि कोई उसकी बात सुन भी रहा है। "पहले कभी भी आपके यहां आने का अवसर न मिला था। मैं तो परदेशी हूं। शायद आप में से कोई हमारे यहां आया हो?"

एक नौजवान मछली, जो शायद केंचुए की तरह निर्भीक और बहादुर थी, ज़रा क़रीब आने का साहस करके पूछने लगी, "भाई, तुम किस जगह की बात कर रहे हो? आख़िर तुम्हारा घर कहां है?"

"आप से मिलकर ख़ुशी हुई!" उसकी आवाज़ सुनते ही केंचुए ने कहा, "मेरा घर ज़मीन के नीचे है। हम लोग वहां गहरे अंधकार में कंकड़ों, पेड़-पौधों की जड़ों और नन्हे-नन्हे, कीड़े-मकोड़ों के बीच रेंगते रहते हैं।"

देखते ही देखते, वहां तरह-तरह की मछलियों की भीड़ इकट्ठी हो गई।

"कैसा विचित्र कीड़ा है?" उन्होंने आपस में कहा, "कहीं यह हमें कंटिया में फंसाना न चाहता हो?"

"आप लोग मुझे इतना घटिया समझकर मेरी भावना को ठेस पहुंचा रहे हैं", केंचुए ने तपाक से कहा। "मुझे ख़ुद को इस कंटिया पर लटका दिया गया है। मेरे जानी दुश्मन को भी यह नसीब न हो। फिर आप लोगों को मैं इस कष्टदायक फंदे में क्यों फंसाऊंगा? ख़ैर माफ़ करना, मैं तो इन बातों में उलझकर नमस्ते करना ही भूल गया।"

"नमस्ते भाई," इस बार मछलियों ने मित्रवत उत्तर दिया।

सीपी जो सहमकर एक ओर लुढ़क गई थी, अब ज़रा क़रीब तैर आई। केकड़ा अपनी उलटी चाल से आ पहुंचा। बड़े आकार की ब्रीम मछली भी पीछे न रही। फुर्तीली लोच मछली, जो देखने में केंचुए जैसी थी, कीचड़ के अंदर से निकल आई।

"तुम इस हुक पर लटके हो, न चीख़ते हो, न किकियाते हो।" लोच मछली ने केंचुए से कहा।

"आख़िर मैं किसलिए किकियाऊं?" केंचुए ने आश्चर्य से पूछा।

"इसलिए कि तुम्हारी बिरादरी के सभी लोग यहां आते ही ज़ोर-ज़ोर से चीख़ने-किकियाने लगते हैं। या फिर वे डर के मारे होश ही खो बैठते हैं।"

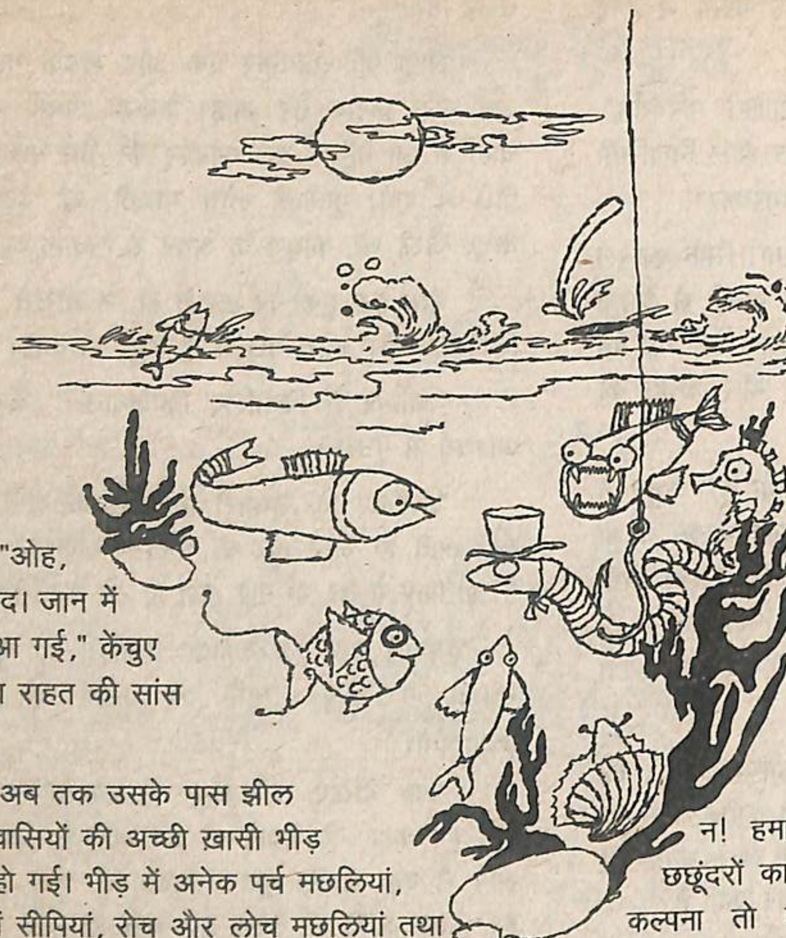
"हमारे यहां एक कहावत प्रचलित है," फुर्तीली मछली ने कहा, "पानी में केंचुए की तरह छटपटाना।"

"अब देखिए न," केंचुए ने स्वजनों का पक्ष लेते हुए कहा, "वे बेचारे तो डर जाते हैं। अच्छा मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूं, क्या आपको हर समय पानी में तैरते हुए बोरियत नहीं होती? यहां तो सांस लेने भर की हवा नहीं आती?"

"सचमुच हमें भी ऊब होती है," फुर्तीली मछली ने उत्तर दिया। "अरे भाई, नई-नई जगह की सैर के लिए मैंने तो अपना सब कुछ लुटा दिया होता। मैं एक बार उछलकर झील के किनारे पहुंची भी थी, लेकिन वहां मेरा दम घुटने लगा और बाल-बाल बचकर झील में लौट आई।"

"हमारे विचार तो आपस में काफ़ी मिलते-जुलते हैं," केंचुआ ख़ुशी से चिल्लाया। "मैं भी जान-बूझकर मछलीमार के चंगुल में चला आया, ताकि रोशनी की दुनिया में कुछ देखा-समझा जा सके। लेकिन मैं यहां आकर थोड़ा दुखी हूं। मैं यहां सांस नहीं ले सकता," केंचुए ने अनिच्छा से कहा।

यह सुनते ही लोच मछली झट से ऊपर गई। उसने पानी के बाहर सिर निकाला, अपने गलफड़ों में ताज़ी हवा को भरा और वापस लौट आई। उसने ताज़ी हवा के बुलबुले केंचुए के आसपास बिखेर दिए।



"ओह, धन्यवाद। जान में जान आ गई," केंचुए ने ज़रा राहत की सांस ली।

अब तक उसके पास झील के निवासियों की अच्छी ख़ासी भीड़ जमा हो गई। भीड़ में अनेक पर्च मछलियां, सैकड़ों सीपियां, रोच और लोच मछलियां तथा दर्ज़नों कीड़े-मकोड़े शामिल थे। वे आपसी झगड़ों को भुलाकर थलवासी की बातें बड़े ध्यान से सुनते रहे।

"मेरे बाप-दादे, उनके बाप-दादों के बाप-दादे और फिर उनके बाप-दादों के बाप-दादे, ज़रा संक्षेप में कहें तो हमारे पूर्वज," केंचुआ अपने ख़ानदान का इतिहास बताने लगा, "बेचारे न जाने कब से ज़मीन खोदते चले आ रहे हैं। लेकिन हमारे पूर्वज पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह बतलाते रहे हैं कि किसी ज़माने में केंचुए जलचर थे। सिर्फ़ भूख और तरह-तरह के ख़तरों से बचने के लिए वे सूखी ज़मीन की ओर भाग आए और तब से ज़मीन के नीचे रहने लगे। आप सोचते होंगे कि ज़मीन खोदने का काम बड़ा दिलचस्प होगा? मैं तो कहता हूं बड़ा घिनौना काम है। पर है तो बड़ा उपयोगी कार्य। जैसे ही हम ज़मीन में सूराख़ करते जाते हैं, खाने की चीज़ें मिलती जाती हैं। मिट्टी के साथ इन्हें खाकर गुज़ारा करते हैं।"

"बाप रे बाप, कण भर खाना और इत्ती ढेर-सी मेहनत!" फुर्तीली मछली ने सहानुभूति प्रदर्शित की।

"इतने से ही छुटकारा मिले तब न! हमारे लिए सबसे बड़ा ख़तरा है छछूंदरों का। ज़रा इस दानवाकर जानवर की कल्पना तो कीजिए। यह अंधा- सा, मोटा, भुक्खड़ जानवर होता है। ये शैतान हमारी आधी नस्ल ही हड़प गए। एक बार मैं ख़ुद उनकी चपेट में आते-आते बचा। ख़ैर, उसे तो गोली मारो!" केंचुए ने हिचकिचाते हुए कहा। "पर दुश्मन तो और भी हैं। मसलन चिड़ियों के बारे में क्या कहेंगे आप? वर्षा के बाद हम लोग ज़मीन के नीचे सांस नहीं ले पाते। दम घुटने लगता है। चारों तरफ पानी ही पानी रहता है, तब हम लोग रेंगकर ऊपर चले आते हैं। और चिड़ियां हमारी घात में बैठी रहती हैं। हम पर हमले करती हैं।"

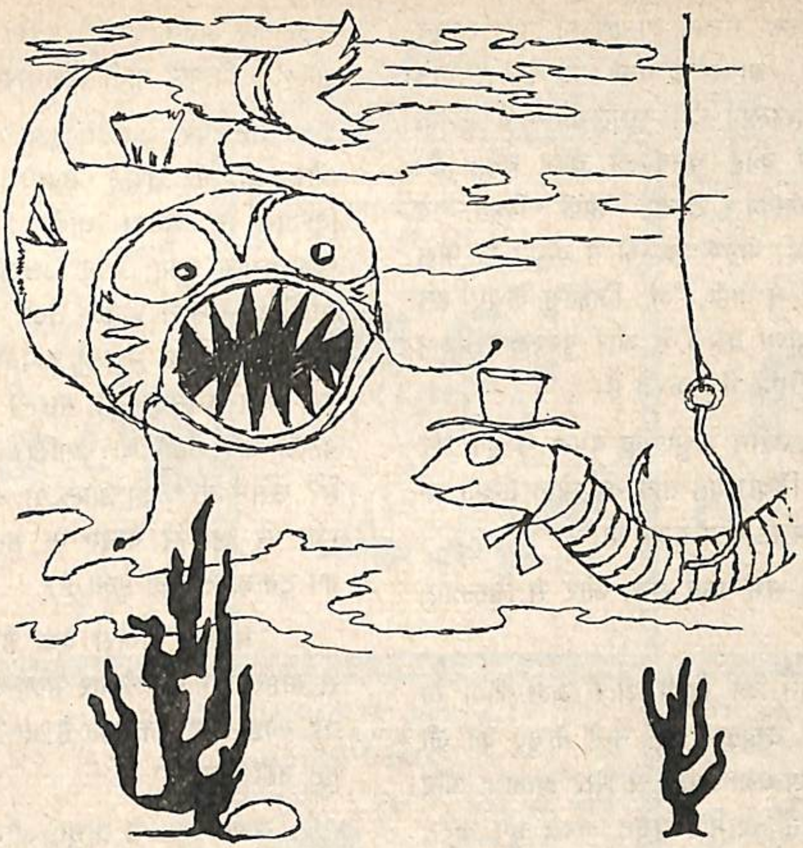
"चिड़िया तो हमारी भी दुश्मन है। ख़ासकर बत्तखें और दूसरे जल पक्षी।" मछलियों ने ठंडी सांसें लीं।

अचानक सन्नाटा छा गया और सारे जीव झट से इधर-उधर हो गए। केंचुए की तरफ एक भारी-भरकम काली पाइक मछली बढ़ती चली आ रही थी। यह झील की रानी थी। अक़्सर वह इस समय झील के गहरे सोते में मज़े से सोया करती है।

लेकिन आज उसकी नींद बीच में ही खुल गई।

"बताओ, यहां क्या हो रहा है?" हिंसक पाइक मछली ने गुर्राकर, पैने दांतों वाला ख़ूब बड़ा सा मुंह खोल दिया। "मेरी आज्ञा के बिना यहां सभा करते हो?"

किसी ने उसका उत्तर न दिया। जो भाग न पाए थे, उनकी घिग्घी बंध गई।



"तुम एक अच्छे नौजवान लगते हो!" मछली ने केंचुए से कहा।

केंचुए ने पाइक मछली के प्रति आभार प्रगट करना चाहा। उसने मुंह खोला ही था कि अपनी बात कह भी न पाया और उसे ऊपर खींच लिया गया। लेकिन शीघ्र ही वह पहले वाली जगह से थोड़ी दूर चला आया।

"कृपया माफ़ कीजिएगा। गुनहगार तो मैं हूं। यह सब मेरी वजह से हुआ है," केंचुए ने हिम्मत से काम लिया।

"मैं यहां पर आपके मित्रों को मोटे, छछूंदरों के बारे में बता रहा था। वे अब तक हमारे बहुत से रिश्तेदारों को खा चुके हैं।" केंचुए ने कहा, "फिर मैंने चिड़ियों के बारे में बताना शुरू किया। मेरे ख़्याल से हमारे दुश्मन एक ही जैसे जल पक्षी..."

"वे मेरे दुश्मन तो नहीं हैं", पाइक ने घमंड से कहा, "बत्तख को ही लें, उसकी टांग पकड़ी और उसे समूचा ही निगल लिया। " उसने यह कहकर अपने घड़ियाली जबड़े खोल दिए।

"आप भी कमाल करती हैं? एक बार में समूची बत्तख निगल सकती हैं? कितनी बहादुर और शक्तिशाली हैं आप।" केंचुआ प्रशंसा करते हुए ख़ुशी से उछल पड़ा।

यह सुनते ही पाइक मछली का गुस्सा ठंडा पड़ गया, यहां तक कि वह धीरे-से मुस्करा दी। झील के इतिहास में यह एक अनहोनी घटना थी।

केकड़े के एक समूह ने झट- से 'ऑक्सीजन तकिया' उसके सिर के नीचे लगा दिया। यह झील की गाद का एक नन्हा-सा ढेर था।

"सच कहूं तो ऐसी उठा-पटक मेरे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक नहीं!" उसने ज़रा दुखी मन से कहा।

"लेकिन केंचुए कभी मन-बहलाव भी करते हैं? कभी उन्हें नींद भी आती है, या रात दिन ज़मीन ही खोदते रहते हैं?" पाइक ने पूछा।

"जी नहीं, वक़्त पर आराम भी करते हैं। रातों में वयोवृद्ध केंचुए भूगर्भ से बाहर निकलकर नरम धरती पर झपकियां लेते हैं। और मुझ जैसे नौजवान फुर्ती से रेंगकर दौड़ते व प्रतियोगिता में हिस्सा लेते हैं, समूह में झूमर नाचते हैं।"

"और हम लोग भी झूमर नाचते हैं।" छोटी मछलियों ने ख़ुशी से चिल्लाकर कहा, "अगर चाहते हो तो नाचकर दिखा भी सकते हैं?"

"बेशक ख़ुशी होगी। मैं देख नहीं सकता, पर महसूस तो कर ही सकता हूं!"

अचानक पाइक मछली ग़ायब हो गई। शायद नाराज़ हो गई है? या सोने चली गई है? लेकिन नहीं, वह फिर दिखलाई दी। मछलियों ने देखा कि वह अपने मुंह में कोई चमकीली चीज़ दबाए है। मछलियों ने उसका रास्ता साफ़ किया, वे तितर-बितर हो गईं। पाइक मछली ने केंचुए के पास आकर गंभीर स्वर में कहा, "ओ, जिज्ञासु केंचुए! हम तेरे साहस की प्रशंसा करते हैं और पुरस्कारस्वरूप तुझे यह क़ीमती तमगा भेंट करते हैं।"

यह कहकर उसने केंचुए के बगल में हुक पर वह तमगा लटका दिया। यह तांबे का गोल तमगा था जिसके बीच में सूराख़ बना हुआ था।

"हुर्रा, हुर्रा!" सभी एक साथ ज़ोर से चिल्लाए, "शाबाश, बहादुर!"

पुरस्कार पाने की ख़ुशी और जल-जीवों के असीम उत्साह को देखकर उस नन्हे केंचुए का जी भर आया। उसने अत्यंत आदर से सिर झुकाया और सभी के प्रति अपना आभार प्रगट करते हुए कहा, "प्रिय दोस्तो, आप सभी का मैं हृदय से बहुत आभारी हूं। घर लौटने पर मैं इस क़ीमती उपहार को यानि कि पुरस्कार में मिले इस अद्‌भुत तमगे को बालू से चमकाकर अपनी सुखद स्मृति के बहुमूल्य ख़ज़ाने में सहेजकर रख लूंगा। पुनः आप सबके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं।"

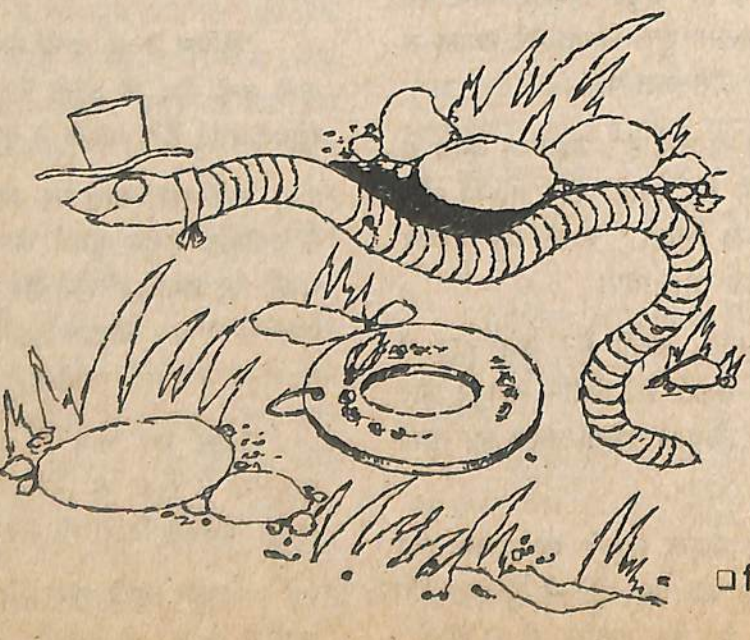
उत्साह से सारे जलचर थिरक उठे। वे इस तरह झूमर नाचने लगे कि भीषण हलचल मच गई। सारी झील खौलने-सी लगी। बुज़ुर्ग पाइक मछली ने तो हद ही कर दी, उसने ऊपर उछलकर अपनी दुम से इतना तेज़ छपाका मारा कि झील के किनारे मोटी जलधारा बह निकली।

तट पर ऊंघता हुआ मछलीमार चौंक पड़ा और जो भी उसने सामने देखा, उस पर उसे विश्वास न हुआ। चारों ओर झील का पानी खलबलाता हुआ ऊपर उछल रहा था। नन्ही-नन्ही मछलियां उन्मत्त होकर तेज़ी से चक्कर खा रही थीं और एक पाइक मछली अपनी दुम की थपकियां दे रही थी। इतनी बड़ी मछली तो उसने जीवन में पहली बार देखी थी। आख़िर झील में हो क्या रहा है? उसने बंसी को झील से बाहर निकाला। लेकिन हुक पर अधमरे केंचुए के साथ एक मैला-सा तांबे का टुकड़ा लटका हुआ है।

"आख़िर माज़रा क्या है? यह तो मेरी समझ से बाहर है," मछलीमार हक्का-बक्का रह गया। "शायद यह कोई जादुई केंचुआ है, तभी तो कोई मछली इसे मुंह नहीं मारती।"

उसने हुक से केंचुए और तांबे के गोल टुकड़े को गुस्से से निकाल फेंका। फिर उसने एक दूसरे पछताते और दहाड़े मारते हुए केंचुए को कंटिया में फंसा दिया।

और इस कहानी का नायक अपने घर के क़रीब नर्म, भीगी हुई ज़मीन पर आ गिरा। वहीं उसके शौर्य और सम्मान का प्रतीक तमगा भी ठीक बगल में पड़ा हुआ था। उसे अपने घर की गंध महसूस हुई और आराम से नर्म, गर्म धरती पर पसरकर उसने सूरज से यह प्रार्थना की कि वह उसके भीगे शरीर और गहरे घाव को जल्दी से सुखा दे।



❑ विताउते जिलिन्स्काइते



बिंदु
साहू
बिंदु, तुम होली खेलने जा रही हो, क्या?
हां, आओ तुम भी।
एक सावधानी अवश्य बरतना जिससे तुम पर लगे होली के रंग पूरी तरह छूट जाए।...
धन्यवाद, मैं होली नहीं खेलती।
होली खेलने के बाद खूब गर्म पानी में नमक डालकर नहा लेना
अच्छे सुझाव हेतु तुम्हारा धन्यवाद।
अरे, कोई बात नहीं।
होली खेलने के बाद –
सुनो; तुमने बिंदु को देखा?
हां, वह होली खेलने में व्यस्त है।
सुनो, होली के रंग बिंदु पर पक्का हो जाए इसकी व्यवस्था मैंने कर रखी है। किसी से मत कहना।
किस तरह?
होली खेलने के बाद हल्के गुनगुने पानी में थोड़ा सा नमक डालकर नहाने से रंग छूट जाता है।... किंतु मैंने बिंदु से कहा है कि वह खूब गर्म पानी में नहाए।
इससे क्या होगा?
होगा क्या, इससे रंग छूटने के बजाए और अधिक पक्का हो जाएगा।
मैं बिंदु हूं ... अब तुम्हें यह पक्का हो जाएगा।
यही

धुआं रहित चिमनी

छोटे-मोटे प्रयोग करते समय या कोई चीज़ बनाते समय कभी-भी कोई सुई, कील गर्म करनी होती है, तो मोमबत्ती या चिमनी आदि का ही इस्तेमाल करना होता है। इनकी लौ में आमतौर पर काला धुआं होता है। इससे गर्म की जाने वाली चीज़ें काली हो जाती हैं। अगर तुम इस कालिख से छुटकारा पाना चाहते हो तो एक धुआंरहित चिमनी बना सकते हो।

इसके लिए तुम्हें जो चीज़ें जुगाड़नी पड़ेंगी, वो हैं इंजेक्शन की बड़ी शीशी, बिजली के फ्यूज़ बल्ब का एल्यूमीनियम वाला भाग, पाउडर का टीन का डिब्बा (पुराना), छोटी कील, चिमनी की बत्ती, हथौड़ी, चाकू आदि।

डिब्बे की टीन की चादर को चाकू और हथौड़ी की मदद से काट लो और सीधा कर लो। अब इसमें से 6 से.मी.×6 से.मी. का एक टुकड़ा काट लो। इस पूरे टुकड़े पर छोटी कील से लगभग आधे-आधे से.मी. की दूरी पर बहुत सारे छेद कर लो।

अब टीन के टुकड़े को मोड़कर बेलनाकार नली जैसा बना लो। ध्यान रखना की इस जाली का खुरदुरा हिस्सा अंदर की ओर रहे। फ्यूज़ बल्ब के एल्यूमीनियम वाले भाग के चौड़े मुंह की किनार में चार जगह लगभग आधे से.मी. गहरे कट लगाओ। फिर चित्र में दिखाए तरीक़े से इसे संकरे मुंह की ओर से इंजेक्शन की शीशी के मुंह में फंसा दो। ज़रूरत हो तो चाकू से संकरे मुंह के किनारे सीधे कर लो ताकि वह शीशी के मुंह में फंस जाए। शीशी में लगभग दो तिहाई भाग तेल भर लो।

अब टीन में से एक गोल चकती काटनी है। इस चकती का नाप एल्यूमीनियम वाले भाग के चौड़े मुंह के भीतरी नाप के बराबर होना चाहिए। इससे चकती चौड़े मुंह से अंदर जा सकेगी पर संकरे मुंह से गिरेगी नहीं। चकती के बीच में एक इतना बड़ा छेद करो कि उसमें से बत्ती बाहर निकल आए।

चकती में बत्ती डालकर उसे चित्र के अनुसार एल्यूमीनियम वाले भाग से पिरोते हुए शीशी में डालो। इसे चौड़े मुंह के कटे हिस्से के नीचे फंसा दो। उसके ऊपर निकली बत्ती को फैलाकर चपटी कर दो।

अब बेलनाकार छेद वाली नली को चौड़े कटे मुंह के बीचों-बीच फंसाकर देखो। ज़रूरत के हिसाब से कटे हिस्सों को चौड़ा या संकरा कर लो।

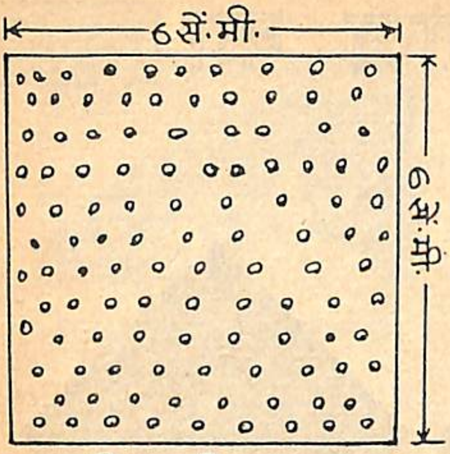
जाली को निकाल कर बत्ती जलाओ और जाली को वापस फंसा दो। ज़रूरत हो तो चाकू या अन्य किसी चीज़ से जाली को दबाकर खड़ी या सीधी कर लो। कभी-कभी जाली गर्म रहने से हाथ जल जाता है इसलिए यह सब काम सावधानी से ही करना।

कुछ देर इंतज़ार करने से लौ धीरे-धीरे पीली होती जाएगी और अंत में नीली-पीली लौ बचेगी जिसमें धुंआ नहीं होगा या बहुत कम होगा। बस, हो गई तुम्हारी धुआंरहित चिमनी तैयार।

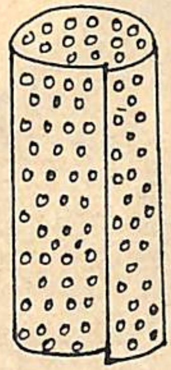
कुछ सावधानियों का ख़ास ध्यान रखना होगा। ये हैं :-

1. बत्ती का ऊपरी भाग चपटा करना ताकि लौ चौड़ी बने।
2. जाली और लौ के बीच चारों ओर बराबर दूरी होना चाहिए।
3. ज़रूरत के अनुसार जाली को सीधी रखो।
4. लौ अचानक बुझ जाए तो जाली के मुंह पर तुरंत जलती तीली ले जाओ। चिमनी फिर जल उठेगी।

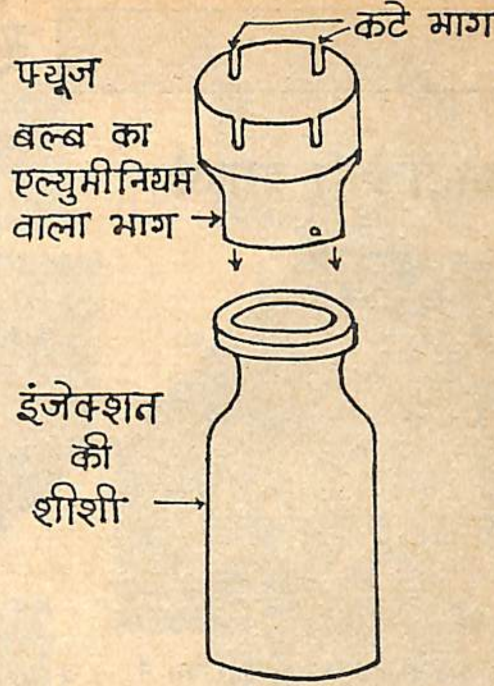
❑ बी.पी. मैथिल व उमेशचंद्र चौहान

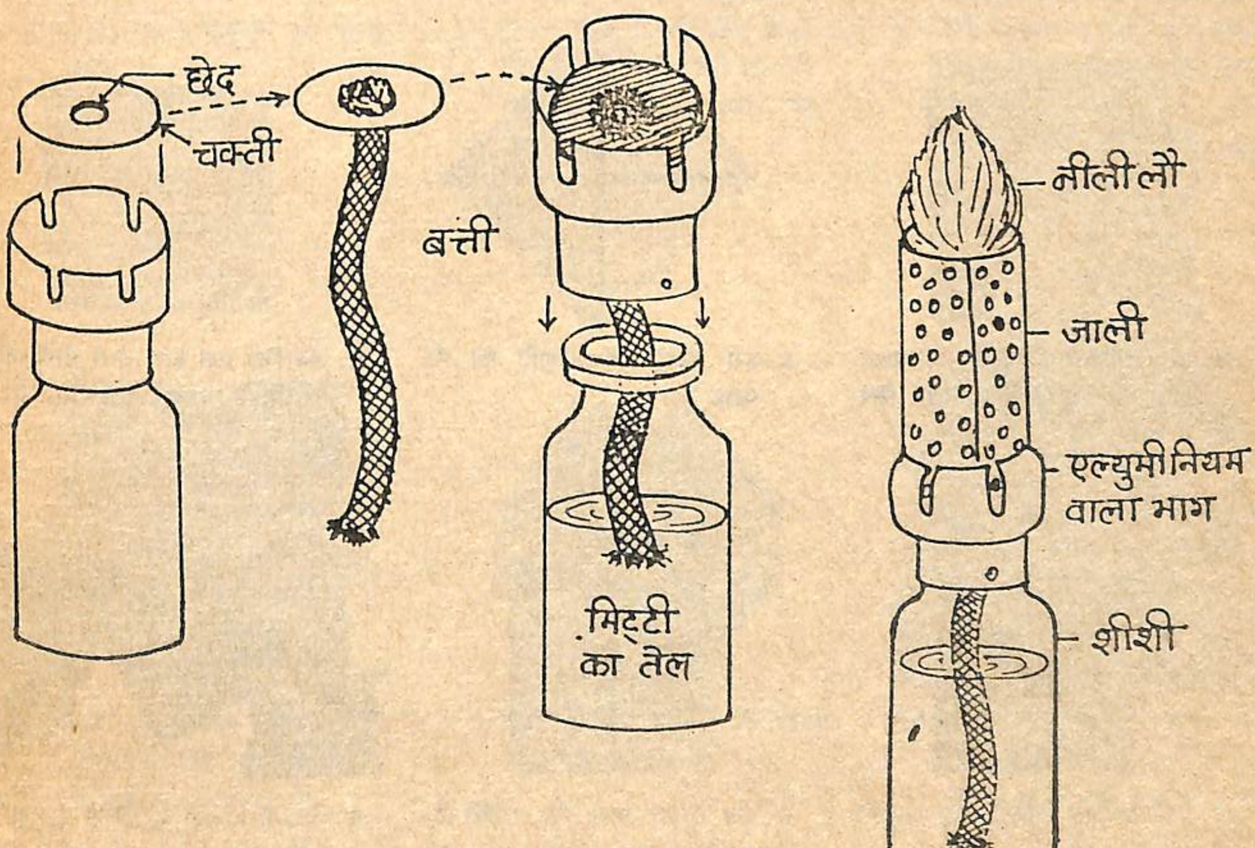


टीन की चादर

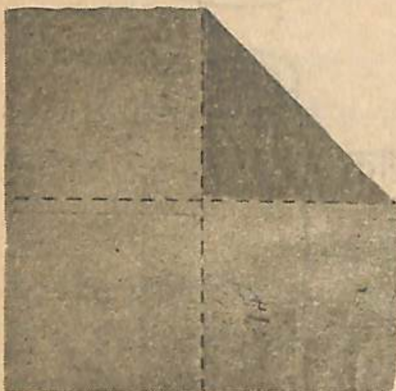


बेलनाकार जाली

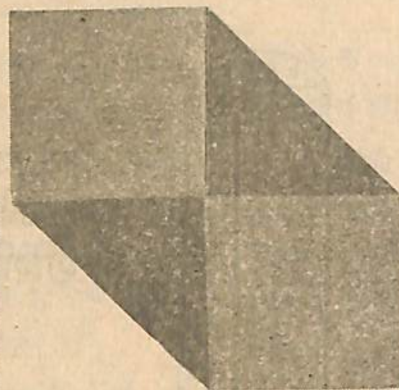




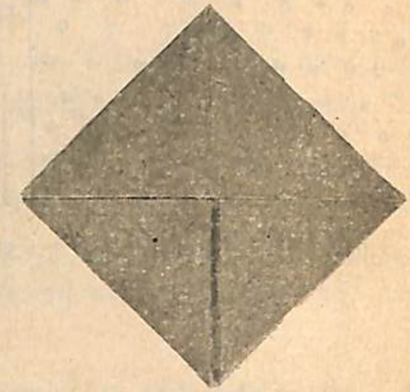
फोटो फ्रेम बनाओ



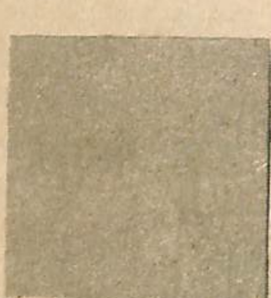
1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से मोड़कर निशान बना लो। अब चित्र में दिखाए तरीक़े से मोड़ना शुरू करो।



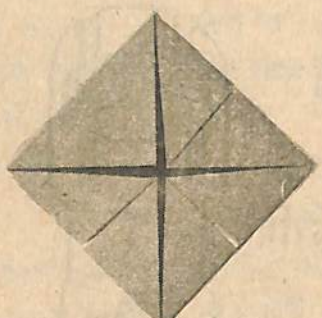
2. दूसरा सिरा भी मोड़ो, इस तरह।



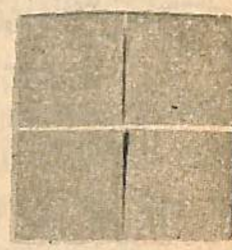
3. तीसरे और चौथे सिरे को भी बीच में मिलाओ। अब तुम्हारे पास फिर एक वर्गाकार आकृति है।



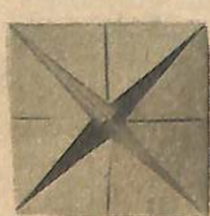
4. इस वर्गाकार आकृति को पलट लो। एक बार फिर चारों सिरे मोड़कर बीच में मिलाओ।



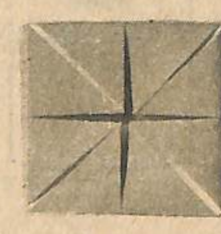
5. इस तरह। इस आकृति को भी पलट लो।



6. अब फिर एक बार, चारों सिरों को उसी तरह मोड़कर बीच में लाओ।



7. ऐसी आकृति मिलेगी। इस आकृति को पलट लो।



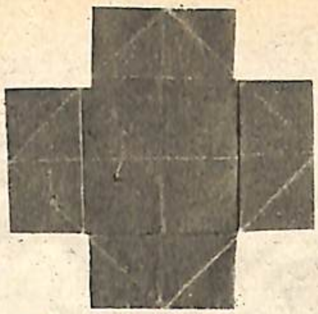
8. अब तुम्हारे पास जो आकृति है, उसमें एक बड़े वर्ग में 4 छोटे वर्ग हैं।



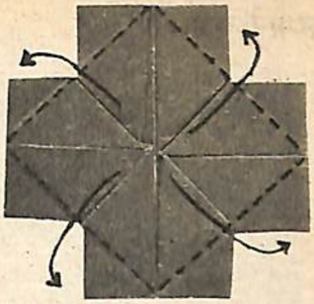
9. चित्र में दिखाए तरीक़े से एक वर्ग खोलो और उसे चपटा कर लो।



10.अब इसी तरह बाक़ी वर्गों को भी खोलकर चपटा कर लो।



11.ऐसी आकृति मिलेगी। इसे पलट लो।



12.चित्र में दिखाई दे रहे त्रिभुजों को टूटी हुई रेखाओं पर से तीर की दिशा में बाहर की तरफ मोड़ो।



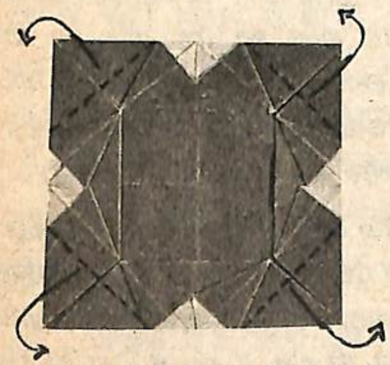
13.ऐसी आकृति मिलेगी। इसे पलट लो।



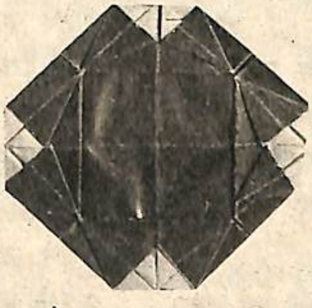
14.इस आकृति में चार छोटे आयत दिखाई देंगे। इनके सिरों को टूटी हुई रेखाओं पर से अंदर की तरफ मोड़ो।



15.ऐसी आकृति मिलेगी। अभी जिन सिरों को मोड़ा था वे दोहरी सतह वाले हैं। इन सभी सिरों को खड़ा करके बीच से खोलते हुए चपटा कर लो।



16.अब चारों कोनों को चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से पीछे की तरफ मोड़ दो।

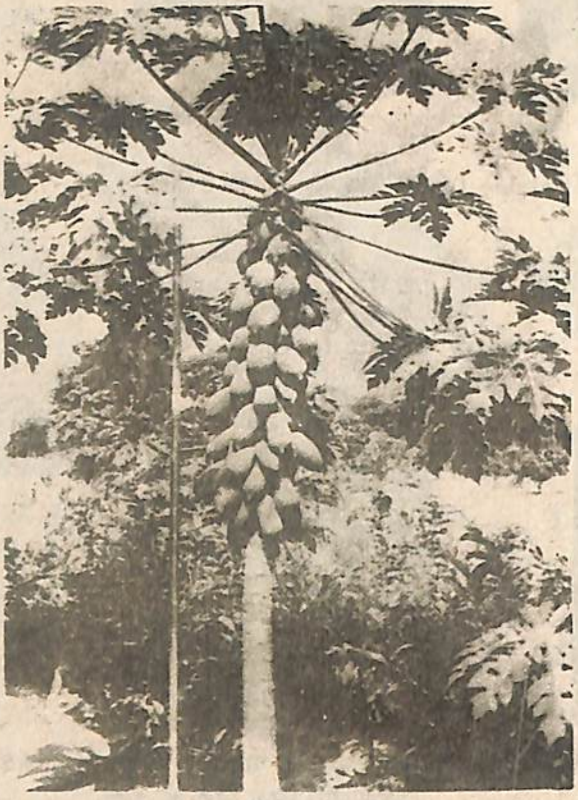


17.लो यह बन गया तस्वीर लगाने का फ्रेम।



18.इसमें सावधानी से तस्वीर को फंसाओ। फ्रेम को धागे से लटका भी सकते हो या चाहो तो पीछे के कोई दो मोड़ खोलकर स्टैंड बना सकते हो।

पपीता



पपीते का पेड़, पपीते के मीठे, रसीले, गुणकारी फल के कारण ख़ूब जाना जाता है। यह मूल रूप से वेस्ट इंडीज़ से हमारे देश में आया था। यह हर प्रकार की ज़मीन पर बड़ी आसानी से उगाया जा सकता है। लेकिन पहाड़ी ज़मीन इसकी उपज के लिए ज़्यादा अच्छी होती है। पहाड़ी ज़मीन भी ऐसी हो जहां ज़्यादा ठंड न पड़ती हो और बर्फ़ तो बिल्कुल न गिरती हो। गर्म देश से आया यह पेड़ रांची, पुणे और हैदराबाद में नकदी फसल की खेती के रूप में ख़ूब लगाया जाता है। इन जगहों पर इस फल की बढ़िया क़िस्में पाई जाती हैं।

पपीते का पेड़ बहुत बड़ा नहीं होता। इसका आकार छाते की तरह होता है- तना लंबा, ऊपरी भाग पर पतली ऊपर की ओर उठी हुई डालें। इसके पत्ते काफ़ी बड़े होते हैं जो अंतिम छोर पर कई भागों में बंटे होते हैं। हर डाल में एक ही पत्ता होता है। डाल पत्ते से ज़्यादा लंबी और खोखली होती है। पेड़ के सबसे ऊपरी हिस्से पर पत्तों का एक गुच्छा होता है।

पपीते के छोटे-छोटे ख़ुशबूदार फूलों का रंग, हल्का पीला होता है। नर फूल और मादा फूल अलग-अलग पेड़ पर लगते हैं। नर और मादा फूलों की बनावट में अंतर होता है। मादा फूल गुच्छों में खिलते हैं। गुच्छों का डंठल बहुत छोटा होता है। पेड़ में जहां पत्तों की डालें जुड़ी होती हैं, वहीं फूलों के डंठल जुड़े होते हैं। इन्हीं में फल लगते हैं। नर फूल लंबी लटकती हुई टहनियों पर खिलते हैं। नर पेड़, यानी नर फूल वाले पेड़, में फल नहीं लगते। इनके अलावा उभयलिंगी पेड़ भी होते हैं जिनमें दोनों तरह के फूल लगते हैं। इनमें भी फल लगते हैं।

पपीता ऐसा फल है जिसे सभी जानते-पहचानते हैं। इसमें गूदा ही गूदा होता है। फल बड़े आकार का होता है। बीज छोटे, काली मिर्च जैसे, काले और बहुत ज़्यादा मात्रा में होते हैं। फल मीठा और रसदार होता है।

इस पेड़ को आसानी से लगाया जा सकता है। बीज से लगने वाला यह पेड़ साल भर के भीतर फल देने लगता है और साल में कई बार फल देता है। पांच-छह सालों बाद यह फल देना कम कर देता है और फल भी छोटे होते जाते हैं।

पपीते के पेड़ के तने, डाल और कच्चे फल से निकलने वाला दूध कई प्रकार के रोगों की दवा बनाने के काम आता है। इसके बीजों का उपयोग पेट के कीड़े मारने की दवा के रूप में होता है। पेट के रोगों में फल भी बहुत फ़ायदा करता है।

अंग्रेज़ी में पपीते को 'पपाया' कहते हैं।

□□

समुद्र



छाया : हिमांशु विश्वास

क्या तुम जानते हो कि हमारे ग्रह का नाम पृथ्वी क्यों पड़ा? शायद हमारे पूर्वजों ने अपने आसपास ज़मीन ही ज़मीन देखी होगी, इसलिए उन्होंने पृथ्वी कहना शुरू कर दिया। लेकिन आज ऐसा लगता है कि हमारे ग्रह का नाम रखने में गलती हो गई। अगर हमारे पूर्वजों को यह जानकारी होती कि हमारे ग्रह की लगभग 71% (यानी लगभग तीन चौथाई) सतह पर पानी है, तो वे इसका नाम समुद्र या सागर रखते।

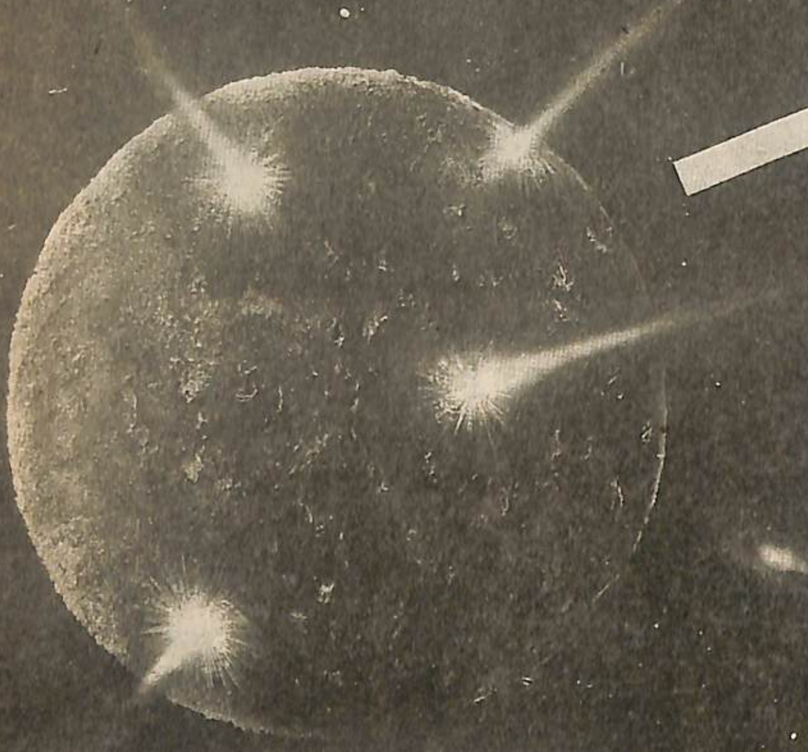
वास्तव में हमारा ग्रह पानी से लबालब है। और इस तरह का कोई दूसरा ग्रह या उपग्रह हमारे सौर मंडल में तो है नहीं। ऐसा लगता है कि पृथ्वी पर जीवधारी हों, इसके लिए ख़ास पानी की व्यवस्था की गई, क्योंकि पानी के बिना जीवन असंभव है। सभी जीव-चाहे वे छोटे हों या बड़े, एक तरह से रसायनों की चलती-फिरती फैक्ट्री हैं। और इस फैक्ट्री के रसायन घुले हैं, शरीर में पाए जाने वाले पानी में। मानव शरीर का 70% हिस्सा पानी ही है। पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी पेड़-पौधे और जानवर बिना पानी के जीवित नहीं रह सकते। अंततः पानी आता कहां से है- समुद्र या सागर से ही न!

जीवन देने वाला यह समुद्र बहुत ही बड़ा है। इसे सुविधा के लिए पांच महासागरों और अनेक छोटे सागरों में बांटा गया है। वास्तव में सब महासागर और सागर आपस में जुड़े हैं। पांच महासागर हैं- प्रशांत, अटलांटिक, हिंद, अंटार्कटिक व आर्कटिक। इनमें से अकेला प्रशांत महासागर ही अटलांटिक, हिंद और आर्कटिक, तीनों के बराबर है।

आओ, समुद्र के बारे में कुछ और विस्तार से जानें।

■ समुद्र कैसे बने?

❑ पृथ्वी का जन्म लगभग पांच अरब साल पहले हुआ था। इससे पहले पूरा सौर मंडल यानी सूर्य, और उसके इर्द-गिर्द चक्कर काटने वाले ग्रह, उपग्रह आदि, सिर्फ़ गैस के कणों का एक बहुत बड़ा बादल था। यह बादल प्रकृति के नियमों के अनुसार तेज़ी से अपनी धुरी पर घूम रहा था और आसमान में दूर स्थित किसी आकाशगंगा की परिक्रमा भी करता था। जैसे-जैसे समय बीता, गैसों के कण घने होते गए और ठोस पिंडों में बदलते गए। इन्हीं में से एक बड़ा पिंड सूरज बना और उससे दूर एक पिंड से बनी पृथ्वी।





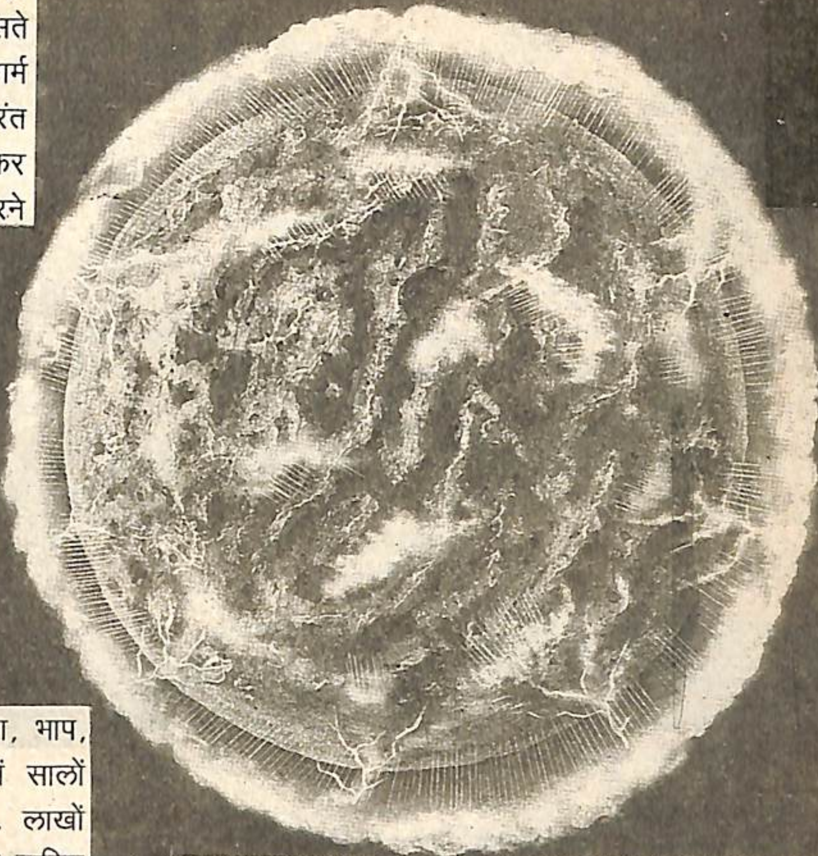
2. चूंकि पृथ्वी लगातार घूम रही थी इसलिए इसका आकार मोटे तौर पर गोल ही बना। जैसे-जैसे पृथ्वी घूमती गई उसका आकार भी धीरे-धीरे सिकुड़कर छोटा होता गया। उस समय पृथ्वी का तापमान बहुत ज़्यादा था और उस पर सागर नहीं थे। हां, उसके वायुमंडल में पानी बहुत बड़ी मात्रा में भाप के रूप में मौजूद था। यह भाप कहां से आई इस पर वैज्ञानिकों में मतभेद हैं। कुछ मानते हैं कि यह वायुमंडल की हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के संयोग से बनी, जबकि कुछ का मानना है कि पृथ्वी के गर्भ में होने वाली जटिल रासायनिक क्रियाओं से यह बनी।

3. जो भी हो, यह भाप धीरे-धीरे वायुमंडल में फैलती गई और अंततः इसने पृथ्वी को पूरी तरह ढक लिया। इससे सूर्य की गर्मी पृथ्वी तक नहीं पहुंचकर भाप की चादर से टकराकर ही लौटने लगी और पृथ्वी धीरे-धीरे ठंडी होती चली गई। इसका असर भाप की चादर पर भी पड़ा। वह भी ठंडी होकर बादलों में बदल गई।

5. गिरने वाले पानी की हर बूंद के भाप बनने के साथ पृथ्वी ठंडी होती गई। उसका तापमान 2000° से धीरे-धीरे घटकर 100° से भी नीचे पहुंच गया। तब बारिश में गिरने वाली बूंदें भाप न बनकर पृथ्वी की सतह पर इक्ट्ठी होने लगीं। भूकंप, ज्वालामुखी जैसी उथल-पुथल से बने गड्ढों में पानी भरने लगा। पानी ने चट्टानों को तोड़-फोड़कर या घोलकर ख़ुद भी गड्ढे बनाने शुरू कर दिए। ऐसे ही बहुत बड़े-बड़े गड्ढों में पानी भरने से समुद्र बने।

4. और अधिक ठंडे होने पर इन बादलों ने बरसना शुरू किया, तो बरसते ही रहे। पर धरती अब भी इतनी गर्म थी, कि जो बूंदें उस पर पड़तीं वे तुरंत भाप बनकर उड़ जातीं। ऊपर जाकर ठंडी होकर ये फिर वर्षा के रूप में गिरने



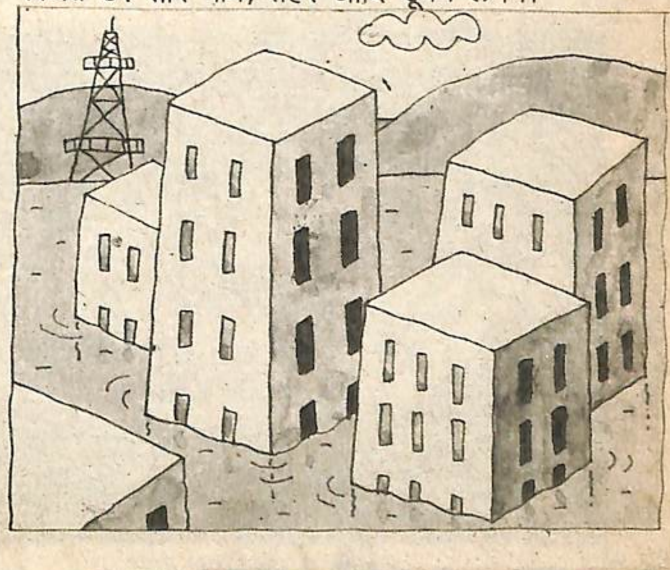


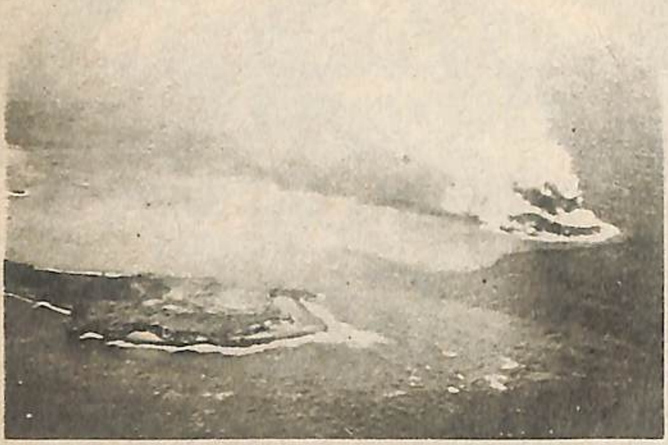
लगतीं। इस तरह से यह बारिश, भाप, बादल का चक्कर हज़ारों लाखों सालों तक चलता रहा। यानी हज़ारों, लाखों सालों तक लगातार, बेरोक-टोक बारिश होती रही। (वैसे इस बात से भी कुछ वैज्ञानिक सहमत नहीं हैं।)



■ *अगर दुनिया की सारी बर्फ़ पिघल जाए तो क्या होगा?*

❑ कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथ्वी धीरे-धीरे गर्म होती जा रही है। अगर यह इतनी गर्म हो जाए कि उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव की सारी बर्फ़ पिघलने लगे तो समुद्र की सतह ऊपर उठने लगेगी। इससे समुद्र के किनारे स्थित ढेर सारे गांव, शहर आदि डूबने लगेंगे।





समुद्र के अंदर स्थित ज्वालामुखी से निकलता धुआं।



प्रवाल नामक समुद्री घास के जमने से बना द्वीप।



समुद्र में डूबा प्रवाल द्वीप।

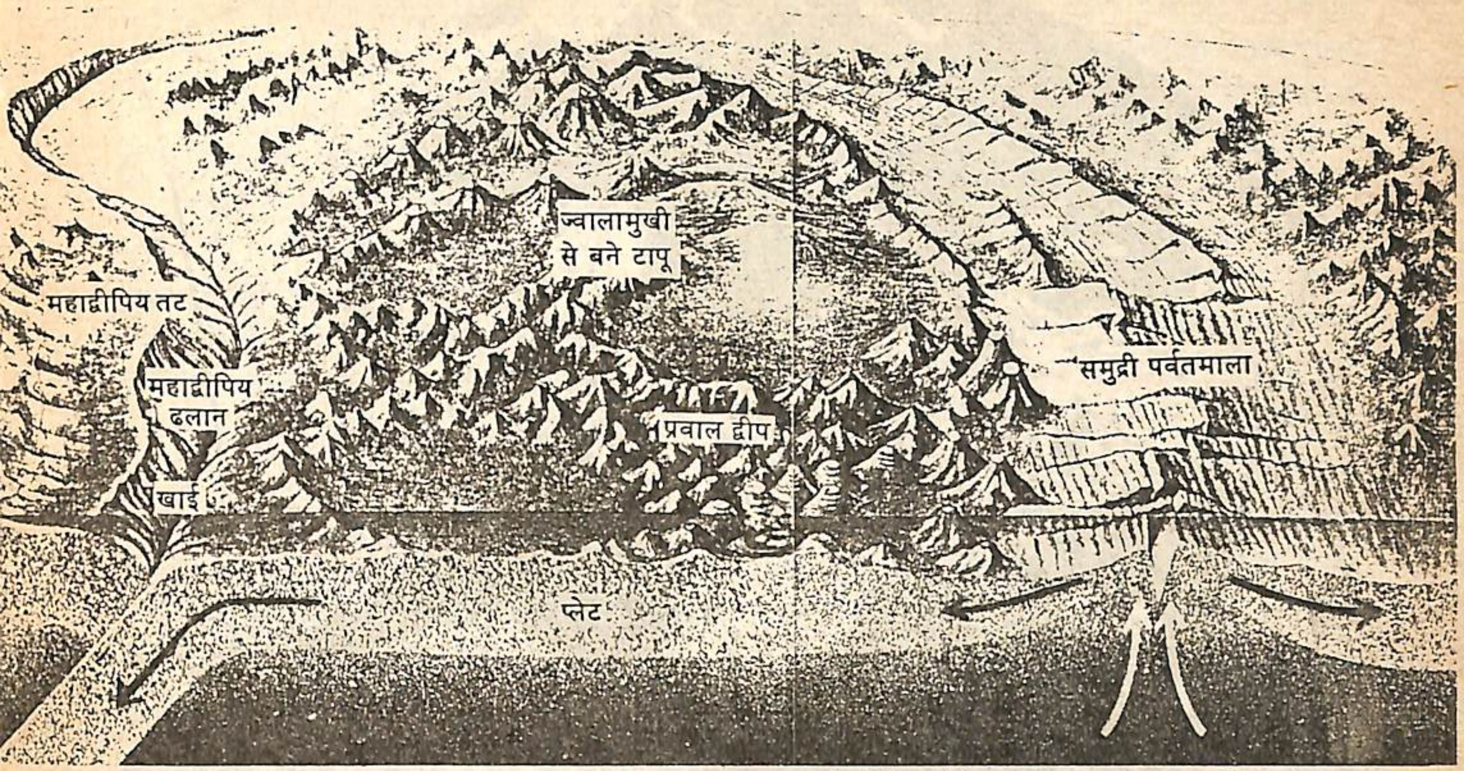


■ समुद्र के नीचे की ज़मीन कैसी है?

❑ समुद्र के नीचे की ज़मीन सपाट नहीं है। ऊपर दिया चित्र देखो। समुद्र के नीचे 65,000 कि.मी. लंबी एक पर्वत श्रृंखला है और हिमालय की सबसे ऊंची चोटी, माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई से भी अधिक गहरी एक घाटी है। मोटे तौर पर समुद्र के नीचे की ज़मीन, सूखी ज़मीन से कहीं अधिक ऊबड़-खाबड़ है।

समुद्र के अंदर ऐसी जगह भी है, जहां ज्वालामुखी की तरह लावा निकलता रहता है। यह लावा वहीं आसपास की दरारों में समा जाता है।

समुद्र के नीचे जो पर्वत श्रृंखला है वह आर्कटिक सागर से दक्षिण की तरफ जाती है। फिर अफ्रीका के दक्षिणी छोर के चारों ओर घूमकर, ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण से गुज़रती है फिर यह दक्षिण अमरीका के दक्षिणी छोर के पश्चिम की ओर जाती है। यहां से यह उत्तर की तरफ बढ़ती है। उत्तरी अमरीका के पश्चिमी समुद्र तट के साथ-साथ चलकर अलास्का पर जाकर ख़त्म होती है। क्या तुम पृष्ठ 28 पर दिए नक्शे में पेंसिल से इस पर्वत



समुद्र से संबंधित फोटो, रेखाचित्र टाइमलाइफ़ सीरिज से साभार।

श्रृंखला को एक रेखा खींचकर दर्शा सकते हो? कोशिश करो और देखो कि कैसे समुद्र के अंदर ही अंदर यह पर्वत श्रृंखला लगभग आधी दुनिया का सफ़र तय करती है।

■ *क्या समुद्र के अंदर जा सकते हैं और कितनी गहराई तक?*

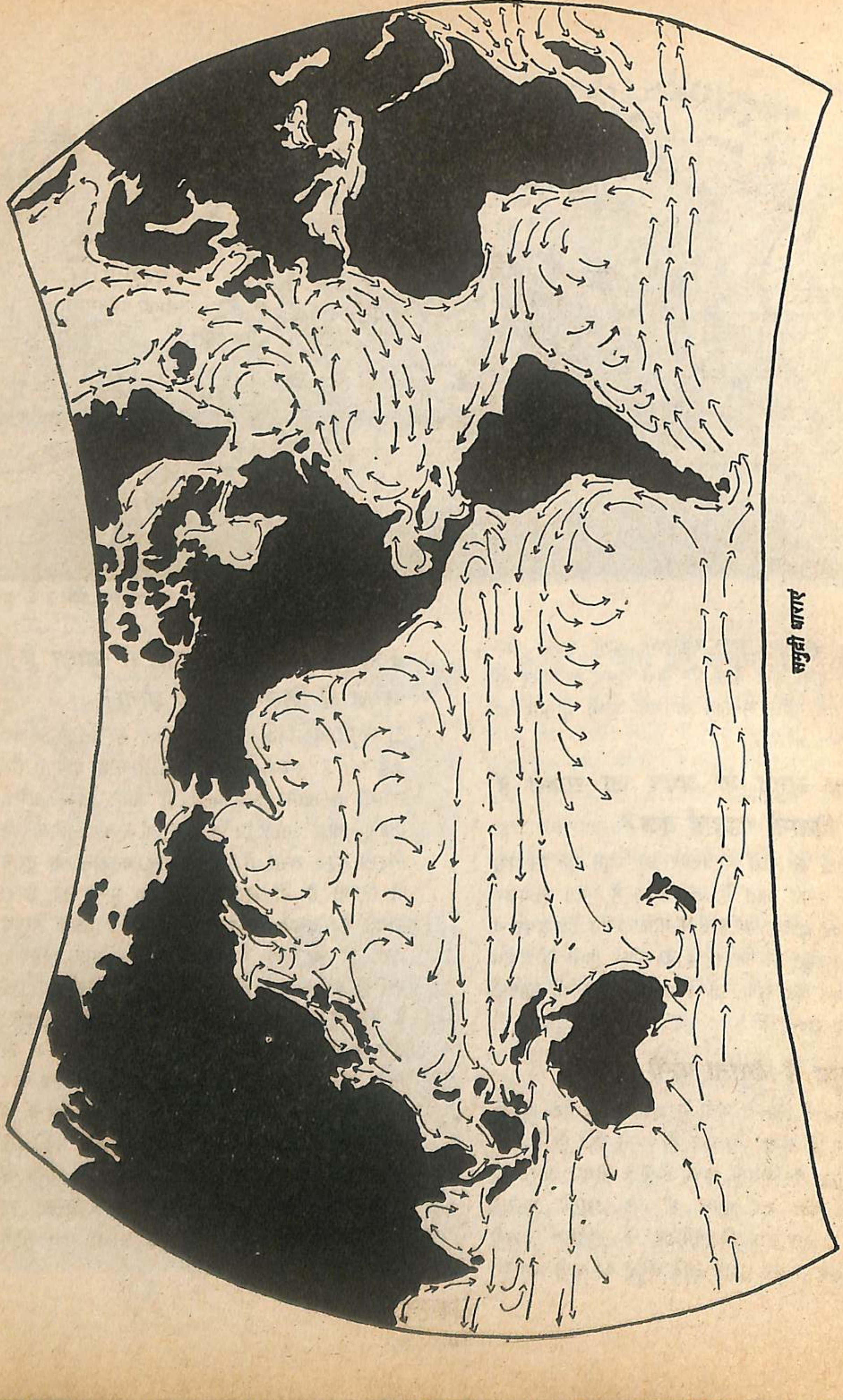
❑ समुद्र के नीचे गोताखोर तो जाते ही हैं। ऐसे जहाज़ बनाए जाते हैं जो समुद्र में गोता लगाकर समुद्र की दुनिया के बारे में पता लगाते हैं। अगर ये इतने मज़बूत हों कि समुद्र के अंदर पानी के दबाव को सहन कर सकें, तो 6,000 मीटर की गहराई तक जा सकते हैं।

■ *समुद्र में कितना पानी होगा?*

❑ समुद्र में कितना पानी है, इसका हम एक हिसाब तो लगा ही सकते हैं। कुएं तो तुमने देखे ही हैं। एक छोटे कुएं में कितना पानी होगा? सोचो, अगर दो मीटर व्यास का कुआं हो तो उसकी गहराई 40,47,20,00 किलोमीटर के लगभग रखनी होगी, तब जाकर उसमें सारे समुद्र का पानी आएग।

■ *समुद्र में नमक कहां से आता है? समुद्र में कितना नमक होगा?*

❑ समुद्र में नमक कहां से आता है इसको लेकर कई मत हैं। सबसे अधिक प्रचलित मत यही है कि नदियों से आने वाला पानी ही अपने साथ विभिन्न लवण लेकर आता है। पानी को ये लवण नदियों की मिट्टी और रास्ते में पड़ने वाली चट्टानों के टूटने से मिलते हैं। ये लवण समुद्र के पानी को खारा बनाते हैं। इसके अलावा बहुत सारा नमक समुद्र तल की चट्टानों में से आता है। समुद्र लाखों-करोड़ों वर्षों से हर तरह की चीज़ों को समेटता रहा है, जिनमें से नमक वाला हिस्सा पानी में घुलकर उसे खारा बना देता है। समुद्र के पानी में नमक की मात्रा औसतन 3.5% है। अब सोचो कि एक घन मील या 4.2 घन किलोमीटर समुद्रीय पानी में कितने टन नमक होगा? नहीं मालूम? भई यही लगभग 16.6 करोड़ टन नमक। अगर समुद्र में घुला सारा नमक पृथ्वी के भूमि वाले हिस्सों पर फैलाया जाए, तो पूरी भूमि पर 500 फुट मोटी नमक की परत जम जाएगी।



समुद्री धाराएं

■ क्या समुद्र भी बहते हैं?

❑ समुद्र का पानी आमतौर पर ठहरा हुआ-सा दिखता है। परंतु हक़ीक़त में यह पानी हमेशा धाराओं के रूप में बहता रहता है।

कहा जाता है कि अगर हम कोई चिट्ठी एक बोतल में रखकर उसे अच्छी तरह सील करके समुद्र में बहा दें, तो वह समुद्री धाराओं के साथ बहकर किसी अन्य देश भी पहुंच सकती है। अगर तुम्हें कभी समुद्र तट पर जाने का मौका मिले तो यह प्रयोग कर देखना। चिट्ठी में अपना पता लिखना मत भूलना।

चिट्ठी के जवाब की उम्मीद ज़रूर करना, पर दो बातें याद रखना। एक, बोतल समुद्री तूफान में टूट-फूट भी सकती है और दूसरी, हो सकता है जिसे तुम्हारी चिट्ठी मिले उसे तुम्हारी भाषा ही न आती हो!

■ समुद्री धाराएं क्यों और कैसे बनती हैं?

❑ समुद्री धाराएं उत्पन्न करने में हवा प्रमुख भूमिका निभाती है। वैसे पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना भी एक कारण है।

जब हवा चलती है तो वह समुद्र के पानी की ऊपरी सतह को ही अपने साथ बहाती है। परंतु अन्य कई कारणों से जो धाराएं बहती हैं वे हवा की दिशा से 45° के कोण की दिशा में बहती हैं। मानसूनी हवाओं से भी धाराएं बहती हैं। जब ये तेज़ हवाएं समुद्र की सतह पर से बहती हैं तो पानी को लहरों में चढ़ाती-उतारती हैं। ये लहरें सीधे हवा की दिशा में बहने की बजाए, किसी एक दिशा में मुड़ जाती हैं। अगर ये धाराएं उत्तरी गोलार्ध में हैं तो दाहिनी तरफ मुड़ जाती हैं और यदि दक्षिणी गोलार्ध में हैं तो बाईं ओर। यानी उत्तरी गोलार्ध में धाराएं घड़ी की दिशा में ओर दक्षिणी गोलार्ध में घड़ी की विपरीत दिशा में चलती हैं। वास्तव में, धाराओं का इस तरह मुड़ जाना पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमने के कारण होता है।

सामने के पृष्ठ पर नक्शे में तीरों से समुद्री धाराओं का चलना दिखाया गया है। इन तीरों का तुम्हारे लिए शायद कोई महत्व नहीं हो। पर समुद्री यात्रा करने वाले नाविकों के लिए ये नक्शे बहुत मददगार होते हैं। क्योंकि इन्हीं धाराओं की मदद से जहाज़ चलते हैं। अगर धाराएं जहाज़ के रास्ते की दिशा में चलने वाली होती हैं तो जहाज़ आराम से बहता जाता है। लेकिन अगर धाराएं विपरीत दिशा में चल रही होती हैं तो जहाज़ को काफ़ी मुश्किल होती है। ख़ैर.. आजकल तो जहाज़ मोटर से चलते हैं इसलिए अधिक मुश्किल नहीं होती। पर जब पाल वाली नौकाएं चलती थीं, तो वे पूरी तरह इन्हीं पर निर्भर होती थीं।

नाविकों के अलावा समुद्री मछलियां, पक्षी आदि भी इन धाराओं की मदद से अपना रास्ता चुनते और तय करते हैं।

कई समुद्री मछलियां इन धाराओं के साथ बहकर अंडे देने के लिए गर्म तापमान और अनुकूल वातावरण वाले इलाकों में चली जाती हैं। यहां गर्मी में अंडों का विकास आसानी से होता है। फिर जब ये अंडे फूटते हैं और नन्ही मछलियां निकलती हैं, तो वे फिर एक बार समुद्री धाराओं के साथ उन इलाक़ों में चली जाती हैं, जहां समुद्री घास आदि बहुत अधिक मात्रा में होती हैं। फिर खा-पीकर बड़ी होकर ये मछलियां लौटती धाराओं के साथ अपने पूर्वजों के इलाक़ों में लौट जाती हैं।

इसी तरह पक्षी, ख़ासकर प्रवासी पक्षी भी मौसम के अनुसार एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं। जैसे खंजन, थिरथिरा, चहा और ऐसे बहुत-से। ये पक्षी गर्मी का मौसम शुरू होते ही उत्तर की ओर उड़कर ठंडे स्थानों पर चले जाते हैं। इन स्थानों पर तीन-चार महीने बिताकर कड़ाके की सर्दी पड़ने से पहले, दक्षिण की ओर उड़कर भारत जैसे गर्म इलाक़ों में वापस आ जाते हैं।

अपने इस सफ़र के दौरान इन पक्षियों को भोजन (जैसे मछलियां) जुगाड़ने के लिए इन्हीं धाराओं का ध्यान रखना पड़ता है।

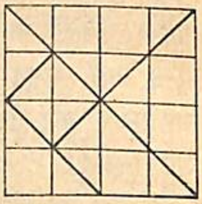
मछुआरे भी मौसम के अनुसार इन धाराओं का अध्ययन करके ये पता लगाते हैं कि मछलियां कहां अधिक मात्रा में मिलेंगी।

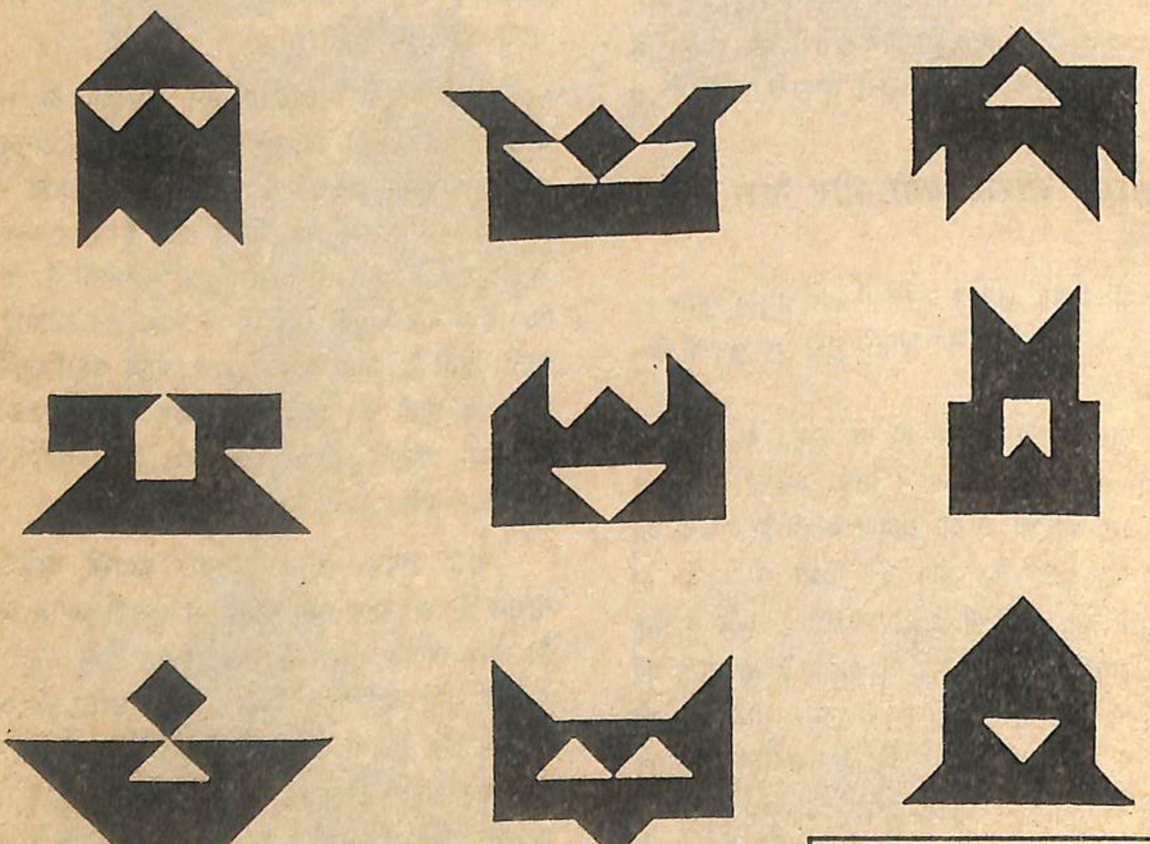
खेल पहेली



यह आकृति सात टुकड़ों (पांच त्रिभुज, एक आयत और एक वर्ग) से मिलकर बनी है। यहां दी गई अन्य आकृतियां भी इन्हीं टुकड़ों से मिलकर बनी हैं। हर आकृति में सातों टुकड़ों का उपयोग हुआ है।

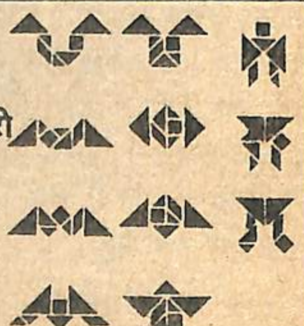
ये सात टुकड़े गत्ते से बनाए जा सकते हैं। एक मोटा गत्ता लो! उस पर एक बड़ा वर्ग बनाओ। वर्ग को 16 बराबर हिस्सों में बांट दो! हर हिस्सा भी एक वर्ग होगा। अब वर्ग पर चित्र में दिखाए अनुसार रेखाएं खींच लो। इन रेखाओं पर से गत्ते को टुकड़ों में काट लो। टुकड़ों पर रंगीन काग़ज़ चिपकाकर सुंदर बना सकते हो। बस इन्हीं टुकड़ों को आपस में मिलाकर रखने पर आकृतियां बनेंगी। तुम भी बना देखो (हल अगले अंक में)।







हल जनवरी 93 अंक के



खेल खेल में

अगले पृष्ठ पर तुम दुनिया का नक्शा देखोगे। लेकिन इस नक्शे में समुद्र नहीं दिखाए गए हैं। समुद्र सामने के पृष्ठ पर बिखरे हुए हैं। इन दोनों की मदद से हम कुछ खेल खेलेंगे। लेकिन पहले कुछ बातचीत। दुनिया का यह नक्शा देखकर तुम सोच रहे होगे कि पृथ्वी तो गोल है, उसका नक्शा चपटा कैसे हो गया, है न? क्या करें, गोल चकमक तो बना नहीं सकते थे। इसीलिए नक्शे को ऐसे बनाया गया है मानो पृथ्वी को बीच से काटकर एक काग़ज़ पर फैला दिया हो। आमतौर पर दुनिया के सभी नक्शे ऐसे ही बनाए जाते हैं।

नक्शा देखते समय दो-तीन बातें ध्यान रखनी होंगी। ये हैं-

1. नक्शे के दाहिनी ओर ऊपर के कोने में दिशाओं का संकेत बना है। इसका अर्थ यह है कि नक्शे में ऊपर की ओर उत्तर दिशा है। नीचे की ओर दक्षिण। बाएं हाथ पर पश्चिम और दाहिने हाथ पर पूर्व। अब ज़रा भारत ढूंढो तो। भारत के बाएं हाथ पर पाकिस्तान, दाहिने हाथ पर बांग्लादेश और बर्मा हैं। यह भी देखो कि चीन के ठीक उत्तर में कौन-सा देश है?
2. नक्शे के बाएं सिरे और दाहिने सिरे पर जो समुद्र हैं वे असल में तो जुड़े हैं। लेकिन एक चित्र में नक्शा दिखाने के चक्कर में इसे बीच से काटना पड़ा। इसीलिए सामने के पृष्ठ पर दिए हुए समुद्रों के चित्रों में प्रशांत महासागर का चित्र दो हिस्सों में बंटा हुआ है। कल्पना करो कि अगर इस चित्र को पेज से काटकर गेंद जैसा गोल आकार दिया जाए तो प्रशांत महासागर के दोनों छोर आपस में कैसे मिलेंगे?
3. सामने के पृष्ठ पर प्रशांत, अटलांटिक, हिंद और आर्कटिक महासागर दिखाए गए हैं। इनके अलावा भूमध्य सागर भी एक बड़ा सागर है। आर्कटिक महासागर उत्तरी ध्रुव के चारों और फैला है और अंटार्कटिक महासागर दक्षिणी ध्रुव के चारों ओर। नक्शे में अंटार्कटिक महासागर नहीं दिखाया गया है।
4. नक्शे में महाद्वीपों तथा देशों को नाम से दिखाया गया है। कुछ जो बहुत छोटे देश हैं, उनके नाम वहां नहीं आ पा रहे थे, इसलिए उन्हें नंबर से दिखाया गया है। उन्हीं नंबरों से उनके नाम नक्शे के नीचे दिए हैं। तुम चाहो तो नक्शे पर छोटे-छोटे अक्षरों में ये नाम लिख लो।

आओ अब खेल की शुरूआत करते हैं। दुनिया का नक्शा और सामने के पृष्ठ पर समुद्रों के टुकड़ों के चित्रों को अच्छी तरह देख लो। अब तुम्हें समुद्र के टुकड़ों को दुनिया के नक्शे में फिट करना है। लेकिन समुद्र के टुकड़ों को काटना मत, नहीं तो खो जाएंगे। समुद्रों की जगह पहचानकर नक्शे में सिर्फ़ तीर से यह बताओ कि वे कहां स्थित हैं। जब सारे समुद्र पहचान लो तो कुछ और खेल भी खेल सकते हो।

अब बताओ कि अगर तुम्हें भारत से अमरीका समुद्री रास्ते से जाना हो, तो तुम्हारे रास्ते में कौन-से समुद्र पड़ेंगे?

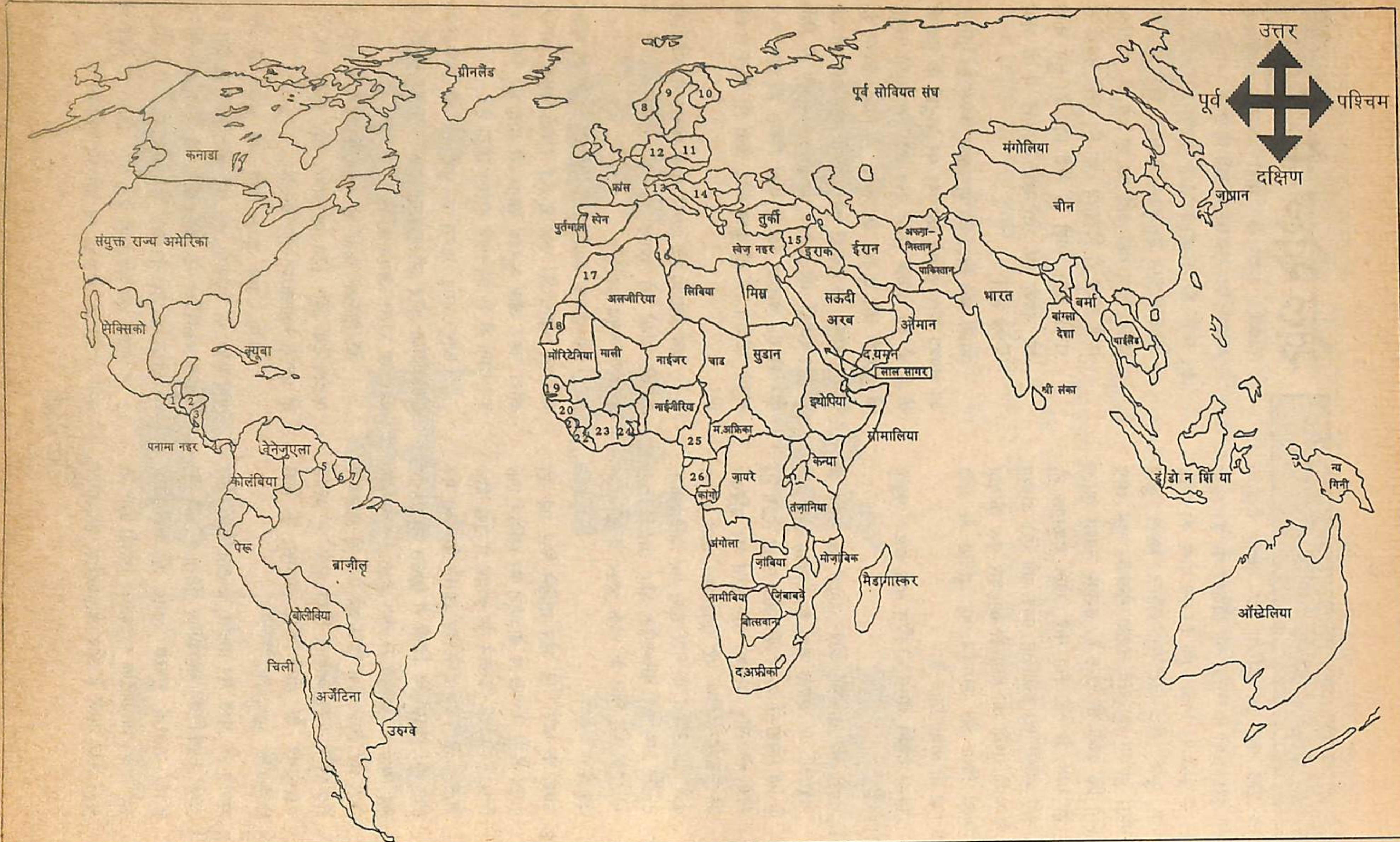
एक रास्ता अफ्रीका के दक्षिणी छोर का चक्कर काटकर जाता है। एक दूसरा रास्ता लाल सागर, स्वेज़ नहर और भूमध्य सागर से होते हुए जाता है। इन दोनों में से कौन-सा रास्ता छोटा है?

और अगर भारत के पूर्वी तट से निकलकर इंडोनेशिया और ऑस्ट्रेलिया रुकते हुए जाना हो तो कौन-सा रास्ता अपनाओगे?

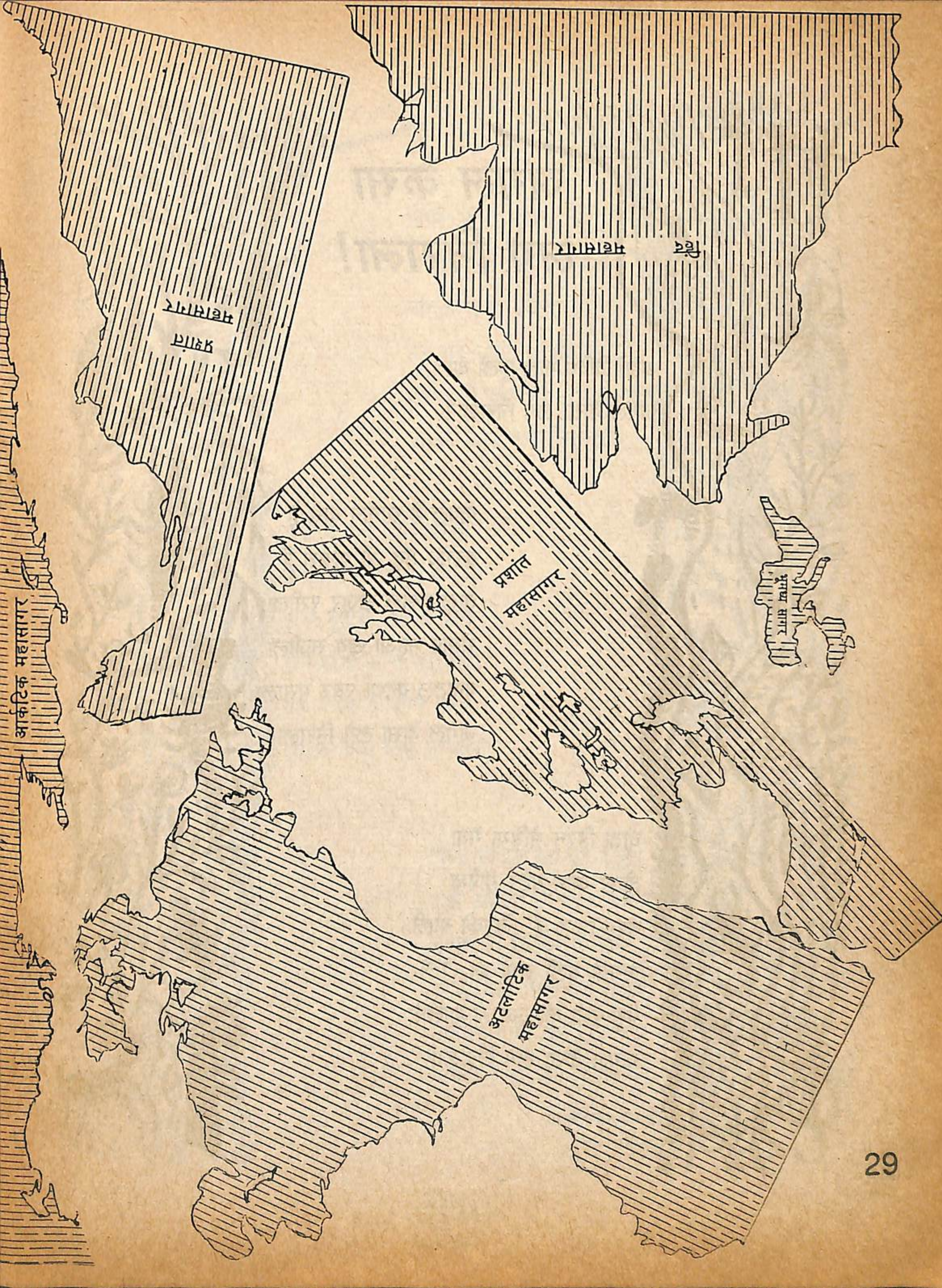
ऑस्ट्रेलिया कहां से पास पड़ेगा? ब्राज़ील से अटलांटिक और हिंद महासागर पार करके या पेरू से प्रशांत महासागर पार करके।

आओ, अब कुछ देशों को ढूंढते हैं। हिंद महासागर के पश्चिमी तट पर कौन-कौन से देश हैं? दक्षिण अमरीका के कौन-कौन से देश अटलांटिक महासागर के तट पर बसे हैं? और भी देश ढूंढो!

नक्शे की मदद से ऐसे और खेल तुम ख़ुद भी बना सकते हो। बनाओ तो हमें भी बताना।



1 ग्वाटेमाला 2. हांडुरस 3. निकारा गुआ 4. पनामा 5. गुयाना 6. सूरीनाम 7. फ्रेंच गुयाना 8. नॉर्वे 9. स्वीडन 10. फिनलैंड 11. पोलैंड 12. जर्मनी 13. इटली 14. युगोस्लाविया 15 सीरिया 16. ट्यूनीशिया 17. मोरक्को 18. स्पेनिश सहारा 19. सेनेगल 20. गेनी 21. सियेरा 22. लाईबेरिया 23. आईवरी कोस्ट 24. घाना 25. कैमरून 26. गैबॉन


आर्कटिक महासागर
प्रशांत महासागर
हिंद महासागर
प्रशांत महासागर
भूमध्य सागर
अटलांटिक महासागर



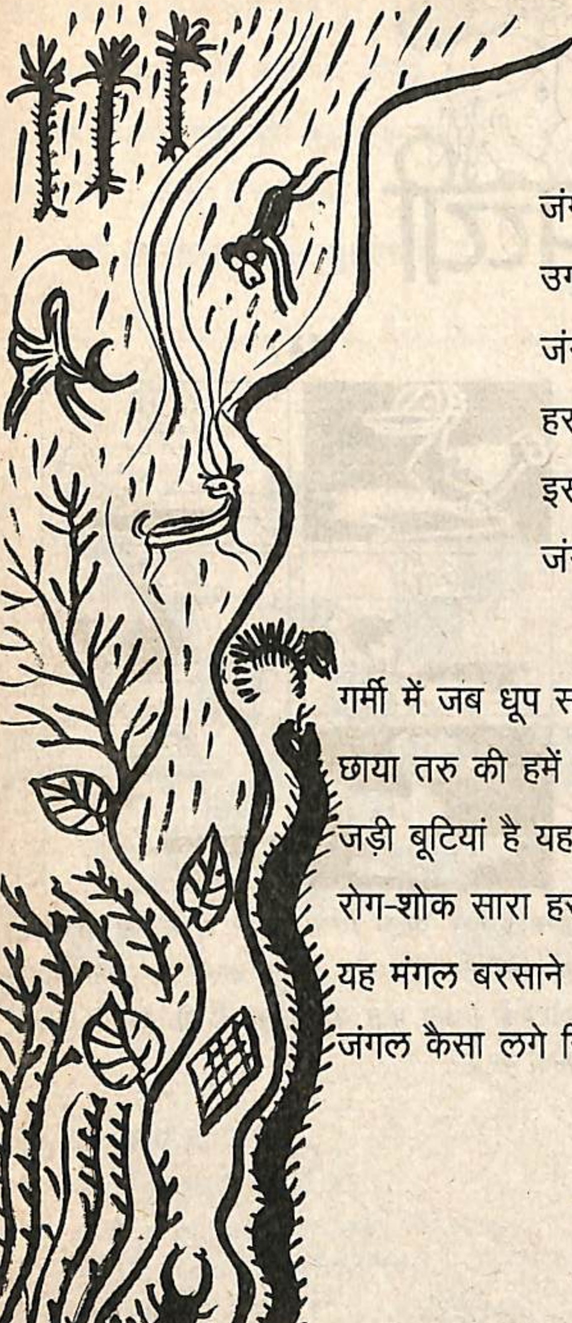
जंगल कैसा लगे निराला!

अहा! विविध फल-फूलों वाला,
जंगल कैसा लगे निराला!!

पीपल हैं सागौन बांस हैं
बरगद तेंदू औ पलाश हैं
ताल-तमाल खजूर रसीला
सेमल महुआ ख़ूब सजीला
कहटल कत्था रबर मसाला
जंगल कैसा लगे निराला!!

चीता हिरन भेड़िया गैया
तीतर काग बटेर गौरैया
तरह-तरह की जिनकी बोली
लगती भली सभी की टोली
पशु-पक्षी की ज्यों हो शाला!
जंगल कैसा लगे निराला!!





जंगल से है वर्षा होती
उगता है फसलों का मोती
जंगल से ही हरियाली है
हर घर- आंगन खुशियाली है
इससे ही सुख का उजियाला!
जंगल कैसा लगे निराला!!

गर्मी में जब धूप सताती
छाया तरु की हमें बचाती
जड़ी बूटियां है यह देता
रोग-शोक सारा हर लेता
यह मंगल बरसाने वाला
जंगल कैसा लगे निराला!!

चलो लगाएं पेड़ आज हम
नहीं अधिक तो कुछ कम-से-कम
इतना तो कर्तव्य निभाएं-
आओ सब मिल इसे बढ़ाएं
पर्यावरण का यह रखवाला।
जंगल कैसा लगे निराला!!



❑ राजनारायण चौधरी
चित्र : आनंद श्याम



माथापच्ची

(1)

समझू जी ने जब आज का अख़बार खोला तो उसमें पन्ना नं. 13 ग़ायब था। यदि अख़बार में कुल पन्ने 20 हैं तो और कौन-कौन से पन्ने नहीं थे उस दिन के अख़बार में?

(2)

निर्भय ने अपने बाबा से एक साइकिल की फरमाईश की। बाबा ने कहा, "अभी नहीं, जब तुम्हारी उम्र मेरी उम्र की एक-तिहाई हो जाएगी, तब साइकिल ख़रीद देंगे।"

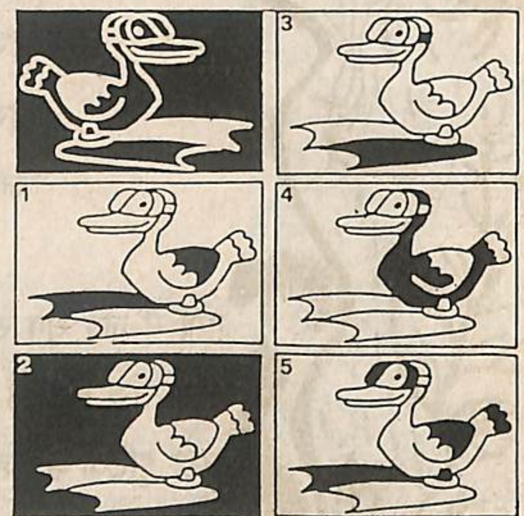
निर्भय अभी बारह साल का है और उसके बाबा पचास साल के। बताओ उसे साइकिल के लिए कितने साल इंतज़ार करना होगा?

(3)



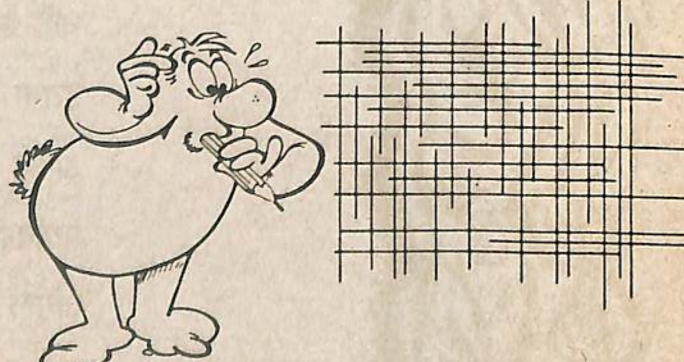
इस तितली के पंखों पर बने डिज़ाइन में एक भूलभुलैया है। 'शुरू' वाले स्थान से, चलकर 'अंत' वाले स्थान तक जाने का रास्ता ढूंढो।

(4)



बिना *नंबर वाला चित्र असल में बत्तख के फोटो का निगेटिव है और नंबर वाले चित्र वास्तविक फोटो हैं। अब पता यह करना है कि निगेटिव किस फोटो का है?*

(5)



जरा *बताओ की इस चित्र में खड़ी और आड़ी रेखाएं कितनी हैं?*

(6)

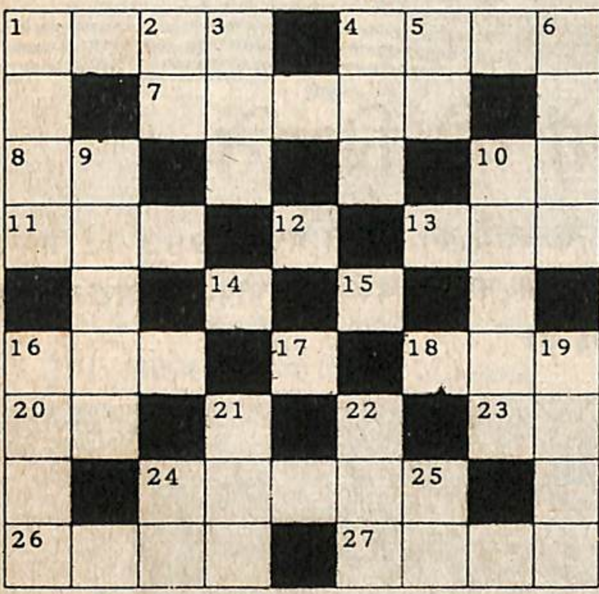
इन वाक्यों में कुछ नाम छिपे हैं, ढूंढो :

1. मां ने कहा, 'तुम बाटी ना खाना।'
2. उसने हाय कहा और बेहोश हो गया।
3. एक छोटा-सा दिया चाहिए।
4. चल आ, शायद स्कूल खुला हो।

(7)

हमारे पास पचास पैसे के सिक्कों की दस ढेरियां हैं। हर ढेरी में दस सिक्के हैं। लेकिन किसी एक ढेरी में नकली सिक्के हैं। किस ढेरी में हैं, यह पता लगाना है। हमारे पास यह जानकारी है कि हर नकली सिक्के का वज़न असली सिक्के से एक ग्राम ज़्यादा है। सिक्कों को तौलने की छूट है, पर सिर्फ़ एक बार और वह भी एक पलड़े वाली तराजू से। तुम भी अपनी अक्ल लगाओ।

वर्ग पहेली-22



संकेत : बाएं से दाएं

1. चीतल की तबाही में चर्चा (4)
4. गांव में ज़मीन की नापजोख करने और लगान वसूलने वाला सरकारी कर्मचारी (4)
7. नौजवान (5)
8. मलबा गड़ाने में बगीचा (2)
10. वैसे तो आसमान में रहता है, पर 'इक' जोड़ दो तो वाद्ययंत्र भी बन जाता है (2)
11. मरहम लगाने में दया भी है (3)
12. जिस ग्रह पर हम रहते हैं (1)
13. उत्पत्ति (3)
14. प्रथम पुरुष (1)
15. आदर सूचक शब्द (1)
16. झूठा कारण (3)
17. एक के बाद क्या आता है? (1)
18. माना के बीच आधे आप (3)
20. पेड़ का धड़ (2)
23. चकमक में थोड़ा-सा (2)
24. नतीजतन (5)
26. शरीरधारी (4)
27. हाथ की कारीगरी (4)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. पुनः-पुनः (2,2)
2. हमारा एक पड़ोसी देश (2)
3. गरम होना (3)
4. हवा (3)
5. स्थिर दृष्टि (2)
6. रीछों के राजा को क्या कहेंगे? (4)
9. आनंद में मग्न होगा (5)
10. ताप मापने का यंत्र (2,3)
16. सात बरस में बातचीत का आनंद (4)
19. नामक (4)
21. जेल का अधिकारी (3)
22. गंधक और कोयले के बारीक चूर्ण का मिश्रण (3)
24. फाल (2)
25. थका हुआ (2)

(शरद कुमार सक्सेना, लोरमी, बिलासपुर, म.प्र. द्वारा तैयार)

☐ सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। उसमें जो शब्द आने वाले हों, उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-22 का हल अप्रैल, 93 के अंक में देखें।



दुनिया के बच्चों की स्थिति

यूनिसेफ़ यानि संयुक्त राष्ट्र बाल कोष ने दुनिया के बच्चों की स्थिति पर, 1993 की अपनी रिपोर्ट हाल ही में जारी की है। इस रिपोर्ट में दुनिया भर के बच्चों के पोषण, स्वास्थ्य तथा उनकी प्राथमिक शिक्षा की स्थिति पर चर्चा की गई है।



रिपोर्ट में कहा गया है, कि निरंतर युद्ध और पर्यावरण विनाश से जूझती दुनिया की सभी समस्याओं और परेशानियों के बावजूद, अब यह स्पष्ट है कि बाल कुपोषण, रोकी जा सकने वाली बीमारियों और निरक्षरता की सदियों पुरानी बुराइयों को अगले एक दशक यानी दस साल में जड़ से समाप्त करना असंभव नहीं है।

यह लक्ष्य हासिल कर लेने से हर वर्ष चालीस लाख से अधिक बच्चों की जीवन रक्षा होगी और जन्म दर कम करने में मदद मिलेगी।

यूनिसेफ़ के कार्यकारी निदेशक जेम्स पी. ग्रांट के अनुसार, इन दिनों सोमालिया, अफ़गानिस्तान या भूतपूर्व युगोस्लाविया की विषम स्थितियों में रह रहे बच्चों की तकलीफ़ों पर यूनिसेफ़ का ध्यान जाना स्वाभाविक ही है। लेकिन दूसरी तरफ हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि रोज़ाना बीमारी और कुपोषण से होने वाली बच्चों की मौतें इससे कहीं बड़े पैमाने पर घटने वाली त्रासदी है।

दुनिया में अब तक किसी अकाल, बाढ़, भूकंप या युद्ध ने एक हफ़्ते में ढाई लाख बच्चों की जान



नहीं ली है, लेकिन कुपोषण और बीमारियों की वजह से हर हफ़्ते इतने ही बच्चे अपनी जान गंवा रहे हैं। इनके अलावा न जाने कितने और बच्चे ख़राब स्वास्थ्य, मंद वृद्धि और निरक्षरता के दुष्चक्र में फंसते जाते हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया के सभी बच्चों को पर्याप्त पोषण, स्वच्छ पानी, बुनियादी स्वास्थ्य सेवा और प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने पर एक वर्ष में क़रीब 25 अरब डालर ख़र्च होंगे।

यह राशि, उस रक़म से कम है जो यूरोप के लोग अपनी शराब पर, अमरीकी अपनी बीयर पर और जापानी कारोबारी मनोरंजन पर ख़र्च करते हैं।

यूनिसेफ़ का सुझाव है कि 25 अरब डालर में से दो-तिहाई तो विकासशील देश ख़ुद जुटा सकते हैं और बाक़ी एक तिहाई सहायता के रूप में मिल सकते हैं। रिपोर्ट के अनुसार संसाधनों की मौजूदा स्थिति में भी यह राशि उपलब्ध हो सकती है, अगर भोजन, पानी, स्वच्छता, बुनियादी स्वास्थ्य सेवा, प्राथमिक शिक्षा और परिवार नियोजन जैसी बुनियादी ज़रूरतों के लिए सारी अंतर्राष्ट्रीय सहायता का 20% और विकासशील देशों में सरकारी ख़र्च की 20% राशि उपलब्ध हो जाए।

बच्चे और बीमारी

रिपोर्ट के अनुसार, विकासशील देशों में हर वर्ष एक करोड़ तीस लाख बच्चों की मौत हो जाती है इनमें से दो-तिहाई सिर्फ़ तीन बीमारियों के कारण होती हैं।

ये तीन बीमारियां हैं- **निमोनिया**, **दस्तरोग** और **खसरा**। ये तीनों मिलकर बच्चों में मौजूदा कुपोषण के लिए भी ज़िम्मेदार हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इन तीनों बीमारियों का उपचार या रोकथाम ऐसे जांचे-परखे उपायों से संभव है, जो आज आसानी से उपलब्ध हैं और जिनका ख़र्च उठाया जा सकता है।

निमोनिया से साल में पैंतीस लाख बच्चों की मौत होती है और यह बच्चों की मौत का सबसे बड़ा कारण है। यूनिसेफ़ के अनुसार, 80% से 90% मामलों में समस्या जीवाणु की होती है और पांच दिन तक सिर्फ़ 25 सेंट (लगभग 7.50 रुपए) के ख़र्च में एंटीबायटिक दवा लेने से ठीक की जा सकती है।



भारत में भी हर साल लाखों बच्चे, बचपन की जानलेवा बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। ये बीमारियां या तो बच्चों के लिए घातक सिद्ध होती हैं या उम्र भर के लिए उन्हें अपंग व रोगी बना जाती हैं। ये बीमारियां हैं-



टिटनस



पोलियो



काली खांसी



तपेदिक (टी बी)



खसरा

इन जानलेवा बीमारियों से बचने का सबसे सरल साधन टीकाकरण है।



दूसरे स्थान पर **दस्तरोग**, प्रतिवर्ष तीस लाख बच्चों की जान लेता है। दस्त लगने पर बच्चों की पुनर्जलीकरण (यानि शरीर में पानी की कमी को पूरा करना) चिकित्सा के बारे में मां-बाप को लगभग मुफ़्त मौखिक जानकारी देकर, इनमें से आधी मौतों को रोका जा सकता है।

तीसरा प्रमुख कारण है **खसरा**। खसरे के कारण हर वर्ष आठ लाख बच्चे मौत का शिकार हो जाते हैं। इस बात के भी स्पष्ट प्रमाण हैं, कि खसरा पीड़ित बच्चों के अन्य बीमारियों और कुपोषण के शिकार होने की आशंका अधिक रहती है। खसरा के टीके की लागत प्रति बच्चा 50 सेंट से भी कम है। पिछले पांच वर्षों में टीकाकरण में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, लेकिन कई इलाकों में सबसे ग़रीब 20% बच्चों तक अभी टीके नहीं पहुंचे हैं।

यूनिसेफ़ के अनुसार, कई अन्य कम लागत के बेहद प्रभावकारी उपाय भी अपनाए जाने के लिए तैयार हैं। जैसे विटामिन ए की कमी से हर वर्ष ढाई लाख बच्चे अंधे हो जाते हैं, और एक करोड़ बच्चे



गंभीर बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं। किंतु अब आहार में मामूली फेरबदल करके, या छः माह में एक बार दिए जाने वाले विटामिन ए कैप्स्यूलों के ज़रिए इस पर क़ाबू पाया जा सकता है। इसकी लागत भी प्रति बच्चा कुछ सेंट ही आती है। इसी तरह बच्चों में मानसिक अवरुद्धता यानी मानसिक विकास न हो पाना एक बड़ी समस्या है और इसका कारण है, आयोडीन की कमी। दुनिया भर में इसका भी सफ़ाया किया जा सकता है। ख़र्च है सिर्फ़ 10 करोड़ डालर यानी दो लड़ाकू विमानों की लागत से कम।





सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता की भूमिका

रिपोर्ट यह भी कहती है कि, आज के बुनियादी बाल स्वास्थ्य उपायों को अपनाने के लिए सामुदायिक कार्यकर्त्ता की अधिक ज़रूरत है, न कि प्रशिक्षित डॉक्टर की।

सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता, सिर्फ़ कुछ महीने के प्रशिक्षण से ही निमोनिया पहचान कर एंटीबायटिक दवा दे सकते हैं, मौखिक पुनर्जलीकरण चिकित्सा सिखा सकते हैं। टीकाकरण का आयोजन करके लेखा-जोखा रख सकते हैं और विटामिन ए तथा आयोडीन की पूरक ख़ुराक दे सकते हैं। वे परिवार नियोजन की जानकारी और सेवाएं प्रदान कर सकते हैं। बीमारी की रोकथाम और घर की स्वच्छता को बढ़ावा दे सकते हैं। परिवारों को स्तनपान के फ़ायदे समझा सकते हैं। बाल वृद्धि के बारे में मौजूदा जानकारी दे सकते हैं। मलेरिया से सुरक्षा की व्यवस्था कर सकते हैं। आवश्यक दवाएं बांट सकते हैं, और अधिक कठिन बीमारियों के लिए मरीज़ों को अधिक जानकार स्वास्थ्य कर्मियों के पास भेज सकते हैं।



अगर यह मान लें कि 200 परिवारों की पीछे एक सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता चाहिए, तो ऐसे बीस लाख कार्यकर्त्ताओं की ज़रूरत है। इन पर वेतन और सेवा के दौरान प्रशिक्षण पर कुल दो अरब डॉलर प्रतिवर्ष ख़र्च होगा। यूनिसेफ़ के अनुसार, यह राशि विकासशील देशों के सैनिकों के वेतन पर सालाना ख़र्च की सिर्फ़ दो प्रतिशत है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि, ऐसी आशंकाएं भी व्यक्त की जा रही हैं कि यूनिसेफ़ द्वारा प्रस्तावित बाल स्वास्थ्य क्रांति से कहीं जनसंख्या विस्फोट की समस्या और विकट तो नहीं हो जाएगी। किंतु यूनिसेफ़ के कार्यकारी निदेशक का कहना है कि, बाल जीवन रक्षा का प्रभाव इसके विपरीत होगा। उनके अनुसार, जब माता-पिता को यह विश्वास होता है कि उनकी मौजूदा संतानें जीवित रहेंगी तो वे कम बच्चे चाहते हैं।

गरीबी का चक्र

रिपोर्ट में ग़रीबी के कई बाहरी कारणों का महत्व स्वीकार किया गया है।

इनमें क़र्ज़, सैनिक ख़र्च, व्यापार प्रतिबंध और देशों के बीच तथा देशों के भीतर असमान आर्थिक संबंध जैसे कारण शामिल हैं। यह तर्क भी दिया गया है, कि ग़रीबी का एक सबसे जबर्दस्त कारण यह है, कि आमतौर पर ग़रीबों के बच्चों के जीवन की शुरूआत संपन्न वर्गों के बच्चों जितनी संपन्न नहीं होती।

श्री ग्रांट के अनुसार, विकास का एक प्रमुख लक्ष्य, कुपोषण और बीमारी के गहन दुष्चक्र को



तोड़ना होना चाहिए। इसी के कारण बच्चों का शारीरिक-मानसिक विकास अवरुद्ध होता है, स्कूल और काम में प्रदर्शन ख़राब रहता है। बड़ों की आजीविका कमाने की क्षमता घटती है। परिवार निर्धन और अक्सर बड़े हो जाते हैं, कुपोषण तथा ग़रीबी के अंतहीन दुष्चक्र में फंसने को मजबूर हो जाते हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी ग़रीबी के बंधन में जकड़े रहते हैं।

यूनिसेफ़ के अनुसार, इस दुष्चक्र को तोड़ने का सही समय बच्चे के जन्म से पहले और उसके जीवन के प्रारंभिक वर्षों के दौरान होता है। यदि इस समय बच्चे की मानसिक और शारीरिक वृद्धि को विशेष संरक्षण दिया जा सके, यदि परिवार, समुदाय और सरकारें बच्चे की सामान्य वृद्धि और विकास पर ग़रीबी के सबसे भयंकर दुष्प्रभावों का असर न पड़ने दें, यदि ग़रीब बच्चों को भी जीवन के इन नाज़ुक महीनों और वर्षों में ऊंचे सामाजिक- आर्थिक वर्गों में जन्मे बच्चों के समान संरक्षण देने के विशेष उपाए किए जा सकें तो, इस दुष्चक्र को तोड़ने में बड़ा भारी योगदान हो सकेगा। ❑❑

माथापच्ची : हल जनवरी, 93 अंक के

1. 14, 21 और 28.
2. मां ने टोकरी में रखे पांच संतरों में से चार संतरे, चार बच्चों में बांट दिए। पांचवां संतरा जो टोकरी में बचा था, उसने टोकरी समेत पांचवे बच्चे को दे दिया। इस तरह एक संतरा टोकरी में रखने की मां की इच्छा भी पूरी हो गई।
4. आकृति नंबर-2
5. बाली ज़रूर जीतेगी। क्योंकि वास्तव में तो राजू और पारो ही खेल रहे हैं, वह तो सिर्फ़ बीच में बैठी है। सवाल की शर्त को याद करो और मान लो कि पारो के पास सफ़ेद मोहरे हैं। अब पारो जो चाल चलेगी, बाली वही चाल अपने सफ़ेद मोहरों से राजू के साथ खेलते हुए चलेगी। जवाब में राजू जो चाल चलेगा, बाली वही चाल, पारो के साथ खेलते हुए चलेगी। बस, यही क्रम चलता रहेगा। अब राजू या पारो में से कोई एक तो जीतेगा ही, सो बाली भी जीतेगी ही।
6. शानू, आरिफ से लंबी है। **7.** चित्र नंबर -2
8. बड़ी यानी 5 से.मी. व्यास वाली कचौड़ी को दो समान टुकड़ों में बांटकर एक-एक टुकड़ा दो बच्चों को दे दो। अब 3 से.मी. व्यास वाली कचौड़ी को 4 से.मी. व्यास वाली कचौड़ी पर रखो और उसमें से 3 से.मी. व्यास का हिस्सा काट लो। इस तरह 3 से.मी. व्यास वाली कचौड़ी और 4 से.मी. व्यास वाली कचौड़ी में से निकला हिस्सा शेष दो बच्चों में एक-एक बांट दो। 4 से.मी. व्यास वाली कचौड़ी का जो गोल छल्ला बचा उसके भी दो समान टुकड़े करके इन्हीं दो बच्चों में बांट दो।

वर्ग पहेली-20 का हल

1 स	■	2 स	ल	3 मा	■	4 क	5 वि	ता
6 बे	ग	म	■	7 न	ग	■	प्र	■
रा	■	र	■	व	■	8 स	ह	9 ज
■	10 ह	■	11 ब	ला	12 शा	■	■	ल
13 भ	या	न	क	■	14 व	न	15 रा	ज
ई	■	■	16 ना	17 ह	क	■	ल	■
18 त	19 र	ल	■	ल	■	20 स	■	21 झू
■	चा	■	22 व	ध	■	23 क	स	म
24 ब	ना	ना	■	25 र	ह	ट	■	र

वर्ग पहेली-20 का सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठक हैं-
श्वेता भावसार, खण्डवा। ऋषिकेश सिदार, अम्बिका सिंह, दीनदयाल सिदार, देवगढ़, रायगढ़। निधि भावसार, होशंगाबाद। प्रशांत भावसार, खरगोन। आर.के. पुरी, मनेंद्रगढ़, सरगुजा। **सभी म.प्र.। इनको तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।**



ज्योत्सना जयराम, चार वर्ष, वाराणसी, उ.प्र.



अंबरीश शुक्ला, छठवीं, इंदौर, म.प्र.

 पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/ 431/93



सौम्या सुरेश, ग्यारह वर्ष, भोपाल, म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना